हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
(लखनऊ से प्रकाशित)
वर्षः- 02, अंकः-192, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, बुधवार 25 दिसम्बर 2024

कुजामा ओसीपी में आंदोलन के दौरान दो गुट हुए आमने..02

भाषण और निबंध प्रतियोगिता में जीते आठ पुरस्कार...06

अटल स्वास्थ्य मेला का शुभारंभ: योगी बोले, पांच साल में 50 हजार लोगों को मिला लाभ

लखनऊ, संवाददाता।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में दिवसीय अटल स्वास्थ्य मेला का उद्घाटन लखनऊ के दिलकुशा लॉन में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया। इस अवसर पर लखनऊ में 662 करोड़ रुपये की लागत से 181 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अटल जी पांच बार लखनऊ से सांसद रहे। उन्होंने देश की राजनीति को अस्थिरता से स्थिरता की ओर अग्रसर किया और पं. दीनदयाल उपाध्याय की अन्त्योदय परिकल्पना को साकार किया।

उनके कार्यों की प्रेरणा से आज यह अटल स्वास्थ्य मेला गरीबों और जरूरतमंदों को स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर रहा है। सीएम योगी ने कहा कि अटल जी के नेतृत्व में 1998-99 में स्वास्थ्य मेलों की शुरुआत हुई थी, जो बीच में बाधित हो गई थी। अब इस परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए पिछले पांच वर्षों से अटल स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 2020 से 2023 के बीच इस मेले से 50 हजार से अधिक लोगों ने लाभ प्राप्त किया है। सीएम योगी ने कहा कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्मार्ट सिटी मिशन के तहत विकसित परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया। 256 करोड़ रुपये की लागत से 136 परियोजनाओं का उद्घाटन और 386 करोड़ रुपये की लागत की 45 परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अटल जी के जन्मशताब्दी वर्ष पर यह आयोजन उनकी विरासत को आगे बढ़ाने और लखनऊवासियों को समर्पित है। लखनऊ का यह स्वास्थ्य मेला अटल जी की सोच और समर्पण का प्रतीक है, जो हर व्यक्ति तक स्वास्थ्य और विकास की रोशनी पहुंचाने का प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, रायसभा सांसद संजय सेठ, विधान परिषद सदस्य डॉ. महेंद्र सिंह, संतोष सिंह, मुकेश शर्मा, इंजी. अवनीश सिंह, रामचंद्र प्रधान, विधायक योगेश शुक्ल, अमरेश कुमार, ओपी श्रीवास्तव, जय देवी आदि मौजूद रहे।

योगी ने की रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की जमकर प्रशंसा

सीएम योगी ने अटल जी को भारतीय राजनीति का अजातशत्रु बताते हुए कहा कि उनकी सहजता और सरलता ने सभी वर्गों का दिल जीता। उन्होंने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन में लखनऊ का सर्वांगीण विकास हो रहा है। सीएम योगी ने कहा कि आज रक्षा मंत्री ने 662 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास कर लखनऊवासियों को बड़ी सौगात दी है। सीएम योगी ने कहा कि मेले में कृत्रिम अंग, ट्राइसाइकिल, व्हीलचेयर और ब्लाइंड स्टिक जैसे सहायक उपकरण वितरित किए जा रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि दिव्यांगजनों की पेंशन बढ़ाकर 12,000 रुपये सालाना कर दी गई है और उपकरण वितरण के लिए व्यापक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

हजारों लोग उठा रहे हैं अटल स्वास्थ्य मेले की सुविधाओं का लाभ

अटल स्वास्थ्य मेले में हजारों लोग स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। मेले में आयुष्मान कार्ड, मातृ वंदना योजना और टीबी मुक्त भारत अभियान के प्रति जागरूकता फैलाई जा रही है। सीएम योगी ने कहा कि यह मेला अटल जी की अन्त्योदय की भावना को साकार कर रहा है। साथ ही, उन्होंने आयोजक नीरज सिंह और उनकी टीम को इस मेले की सफलता के लिए बधाई भी दी।

आंबेडकर पर योगी का कांग्रेस को जवाब, कहा कांग्रेस अंबेडकर पर दुष्प्रचार में लगी है

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कांग्रेस बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर को लेकर भ्रम फैला रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में ही सर्वाधिक दलित और वंचितों की भलाई के लिए काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस दुष्प्रचार कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लखनऊ में मीडिया को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने देश की आजादी में और संविधान के निर्माण में बड़ा योगदान दिया है।

हर भारतवासी उनके प्रति सम्मान रखता है। भाजपा लगातार देश को बाबा साहेब के सपनों का देश बनाने के लिए काम कर रही है। भाजपा ने हमेशा ही उन्हें सम्मान दिया है। उन्होंने कहा कि देश जानता है कि कांग्रेस ने कभी भी बाबा साहेब का सम्मान नहीं किया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल असंवैधानिक और अनैतिक आचरण कर रहे हैं। बाबा साहेब भारत माता के महान सपूत थे। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त की और अर्थव्यवस्था और कानून के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ डिग्री अर्जित की और फिर उसके माध्यम से उन्होंने भारत को अपने उस ज्ञान से आलोकित करने में अपनी पूरी ताकत लगा दी। भारत के संविधान शिल्पी के रूप में हर भारतवासी बाबासाहेब के लिए सम्मान का भाव रखता है। भाजपा उनके प्रति सम्मान का भाव रखते हुए उनके सपनों का भारत बनाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता से काम कर रही है। देश में अटल जी की सरकार रही हो या फिर प्रधानमंत्री मोदी की सरकार हमेशा ही बाबा साहेब का सम्मान किया। बता दें कि मंगलवार को प्रदेश भर में कांग्रेस और बसपा गृहमंत्री अमित शाह के डॉ. आंबेडकर पर दिये गए बयान के खिलाफ प्रदर्शन कर रही है।

राजनाथ ने सुनाया अटल जी से जुड़ा किस्सा, सीएम की प्रशंसा कर बोले- जो मैं न कर सका योगी जी ने किया

लखनऊ, संवाददाता।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि जब नरसिम्हा राव जी प्रधानमंत्री थे तब अटल जी संसद में नेता प्रतिपक्ष थे। उस समय संयुक्त राष्ट्र संघ के फोरम पर जेनेवा में भारत का पक्ष प्रस्तुत करना था, तब नरसिम्हा राव ने कहा कि यह कार्य प्रभावी ढंग से केवल अटल जी ही कर सकते हैं। अटल जी जेनेवा गए। अटल जी का व्यक्तित्व विलक्षण था। यह ऐसे लोग होते हैं, जो राजनीति कुछ प्राप्त करने, कद ऊंचा करने के लिए नहीं, बल्कि देश-समाज बनाने के लिए करते थे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मंगलवार को अटल स्वास्थ्य मेला का शुभारंभ किया। राजनाथ सिंह ने अटल जी से जुड़े संस्मरण भी सुनाए। रक्षा मंत्री ने कहा कि अटल जी ने प्रधानमंत्री रहते हुए स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक योजनाएं प्रारंभ कीं। मोदी जी भी उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहे हैं। देश में 40 करोड़ से अधिक लोगों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिल रहा है। इसके तहत अब 70 वर्ष से ऊपर हर किसी का पांच लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज होगा। जनऔषधि केंद्रों पर भी 50 से 80 फीसदी सस्ती दवाएं प्राप्त हो रही हैं। लोगों को इन केंद्रों की जानकारी देनी चाहिए। हमारी सरकार आने के बाद मोदी जी के नेतृत्व में 22 एम्स को स्वीकृति दी गई थी, इसमें 12 से अधिक एम्स बनकर तैयार हो गए थे, 4 पर कार्य चल रहा है। 2014 में देश में 387 मेडिकल कॉलेज थे, अब 780 हो गई है। एमबीबीएस की सीटें पहले 50 हजार थी, अब 1.20 लाख पहुंच गई है। रक्षा मंत्री ने कहा कि यूपी में भी योगी जी के नेतृत्व में डबल इंजन की भाजपा सरकार स्वास्थ्य कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उत्तर प्रदेश में तेज एंबुलेंस सेवा योगी जी ने प्रारंभ की। त्वरित उपचार व हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में योगी जी के कार्यों की जितनी भी सराहना की जाए, वह कम है। योगी सरकार ने मेडिकल कॉलेज की संख्या व सीटों में वृद्धि का नया रिकॉर्ड कायम किया है। अलग-अलग चरणों में केंद्र सरकार के सहयोग से राज्य सरकार द्वारा 2017 में 27 मेडिकल कॉलेज बनने शुरू हुए हैं। 14 मेडिकल कॉलेज काम करने लगे हैं।

चंडीगढ़ निगम में कांग्रेस-भाजपा पार्षदों में हाथापाई

चंडीगढ़, एजेंसी। चंडीगढ़ नगर निगम की हाउस मीटिंग में मंगलवार को कांग्रेस और भाजपा के पार्षद भिड़ गए। इसकी शुरुआत तब हुई, जब कांग्रेस पार्षदों ने मेयर चुनाव के वक्त वोट काउंटिंग में गड़बड़ी के आरोपी नॉमिनेटेड पार्षद अनिल मसीह को वोट चोर कहना शुरू कर दिया। इसके विरोध में मसीह वेल में आए और कहा कि राहुल गांधी भी जमानत पर हैं। इससे कांग्रेसी पार्षद भड़क उठे। उन्होंने अनिल मसीह के लिए वोट चोर के नारे लगाते हुए पोस्टर लहराने शुरू कर दिए। यह देख भाजपा पार्षदों ने कांग्रेस के पार्षदों के हाथ से अनिल मसीह को वोट चोर कहने वाले पोस्टर छीन लिए। दोनों तरफ से विवाद इतना बढ़ा कि कांग्रेसी पार्षद गुरप्रीत और सीनियर डिप्टी मेयर कुलजीत सिंह संधू के बीच बहस होने लगी। इससे बवाल यादा बढ़ा और दोनों पक्षों के बीच हाथापाई हो गई। हंगामा बढ़ते देख हाउस की मीटिंग को स्थगित कर दिया गया। अनिल मसीह तब सुर्खियों में आए थे, जब उन्होंने यहां मेयर के चुनाव के वक्त आप-कांग्रेस के 8 पार्षदों के वोट निशान लगाकर इनवैलिड कर दिए और भाजपा उम्मीदवार को जिता दिया। हालांकि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद दोबारा गिनती से आप-कांग्रेस से कुलदीप कुमार मेयर बने।

➲ अनिल मसीह को वोट चोर कहने पर हंगामा, मेयर चुनाव में गड़बड़ी की थी, मीटिंग स्थगित

चुनाव नियमों में बदलाव को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती

कांग्रेस ने याचिका लगाई, केंद्र ने पोलिंग बूथ के फुटेज सार्वजनिक करने से इनकार किया था

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने मंगलवार को चुनाव से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स पब्लिक करने से रोकने के नियम को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। केंद्र सरकार ने 20 दिसंबर को पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी, वेबकास्टिंग फुटेज और उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे कुछ इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स को पब्लिक करने से रोकने के लिए चुनाव नियमों में बदलाव किया था। याचिका पर कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा- चुनाव आयोग को ऐसे महत्वपूर्ण कानून (चुनाव संचालन नियम, 1961) में एकतरफा संशोधन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। नियमों में बदलाव के बाद 21 दिसंबर को रमेश ने कहा था- चुनाव आयोग पारदर्शिता से इतना डरता क्यों है। आयोग के इस कदम को जल्द ही कानूनी चुनौती दी जाएगी। चुनाव आयोग ने कानून में नियमानुसार शब्द जोड़ा चुनाव आयोग (ईसी) की सिफारिश पर कानून मंत्रालय ने 20 दिसंबर को द कंडक्ट ऑफ इलेक्शन रूल- 1961 के नियम 93(2)(ए) में बदलाव किया है। नियम 93 कहता है- चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे। इसे बदलकर चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज नियमानुसार पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया था कि एआई के इस्तेमाल से पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी फुटेज से छेड़छाड़ करके फेक नैरेटिव फैलाया जा सकता है। इसी कारण इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड पब्लिक करने पर रोक लगाई गई है। हालांकि बदलाव के बाद भी ये रिकाड्र्स कैंडिडेट्स के लिए उपलब्ध रहेंगे। अन्य लोग इसे लेने के लिए कोर्ट जा सकते हैं। दरअसल, पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने एक केस में हरियाणा विधानसभा चुनाव से जुड़े दस्तावेज याचिकाकर्ता से साझा करने का निर्देश दिया था।

भगदड़ केस

अल्लू अर्जुन से 3 घंटे से ज्यादा पूछताछ हुई

हैदराबाद, एजेंसी।

पुष्पा-2 के प्रीमियर के दौरान भगदड़ केस में पुलिस ने मंगलवार को अल्लू अर्जुन से 3 घंटे से ज्यादा पूछताछ की। हैदराबाद सेंट्रल जोन डीसीपी के नेतृत्व वाली टीम ने एक्टर से सवाल किए। रिपोर्ट्स के मुताबिक अल्लू अर्जुन से पूछा गया कि क्या वे घटनास्थल पर मौजूद थे। उन्होंने हालात कैसे संभाले? इस पर उन्होंने कहा- मुझे महिला की मौत की जानकारी अगले दिन मिली। जानकारी के मुताबिक पुलिस घटना का सीन भी री-क्रिएट कर सकती है। अल्लू सुबह 11 बजे चिक्कड़पल्ली पुलिस स्टेशन पहुंचे थे। उनसे दोपहर 2.45 बजे तक पूछताछ चली। इस दौरान स्टेशन में भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी और स्टेशन के रास्तों को ब्लॉक किया गया था। अल्लू को 23 दिसंबर पुलिस ने नोटिस जारी कर पेश होने का कहा था। इधर 4 दिसंबर को संध्या थिएटर में हुई घटना का एक और वीडियो सामने आया। इसमें सीढ़ियों से भीड़ उतरती नजर आ रही है। 15 सेकेंड के इस वीडियो के 8वें सेकेंड पर कुछ लोग एक बदहवास शख्स को बाहर ले जाते नजर आ रहे हैं। पुलिस ने अल्लू अर्जुन के रिश्तेदारों को अलर्ट किया है। साथ ही एक्टर के घर के बाहर बैरिकेडिंग भी कर दी गई है, ताकि 22 दिसंबर जैसी घटना दोबारा न हो। दरअसल, 22 दिसंबर को अल्लू अर्जुन के घर में तोड़फोड़ की गई थी। इससे पहले अल्लू अर्जुन से इस मामले में 10 दिसंबर को पूछताछ हुई थी।

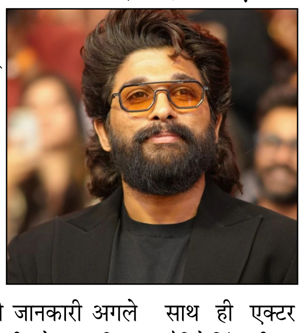

बेलगावी बैठक में गांधी के सत्याग्रह को नव सत्याग्रह में तब्दील करेगी कांग्रेस

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने कहा है कि महात्मा गांधी की अध्यक्षता में हुई ऐतिहासिक बेलगामी अधिवेशन की 100वीं वर्षगांठ पर कांग्रेस कार्य समिति की विस्तारित बैठक बेलगावी में 26 दिसंबर को ही आयोजित की जा रही है जिसमें देश भर के 200 से यादा प्रमुख नेता हिस्सा लेंगे। कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल, संचार विभाग के प्रभारी जय राम रमेश तथा संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने बुधवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि कार्य समिति की बैठक बेलगावी के महात्मा गांधी नगर में उसी स्थान पर आयोजित होगी, जहां 100 साल पहले हुए कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधी को पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता सौंपी गई थी। बैठक का नाम नव सत्याग्रह रखा गया है क्योंकि 100 साल पहले गांधी जी ने इसी जगह से सत्याग्रह का विचार रखा था।

राहुल गांधी दिल्ली की सब्जी मंडी पहुंचे, कहा

40 का लहसुन 400 में बिक रहा, जनता महंगाई से परेशान, सरकार कुंभकरण जैसे सो रही

नयी दिल्ली, एजेंसी।

लोकसभा में विपक्ष के नेता एवं कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने ज़रूरी वस्तुओं की आसमान छूती कीमतों को लेकर मंगलवार को सरकार पर कड़ा हमला किया और कहा कि मोदी सरकार की नीति आम जनता विरोधी है इसलिए महंगाई रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाए जा रहे है। श्री गांधी ने कहा कि महंगाई के कारण आम आदमी का बजट गड़बड़ा गया है और जरुरी वस्तुओं के दाम सामान्य आदमी की पहुंच से बाहर हो गये हैं। सरकार कीमतों को नियंत्रित करने के लिए कोई पहल नहीं कर रही है और वह आसमान छूती महंगाई को नियंत्रित करने में विफल हो रही है। श्री गांधी ने आज यहां गिरी नगर में हनुमान मंदिर के पास सब्जी मंडी में सब्जियों की कीमतों को लेकर लोगों से बात की और कहा कि सरकार महंगाई नहीं रोक पा रही है तथा महंगाई के कारण आम आदमी का जीवन कठिन हो गया है। उन्होंने कहा लहसुन कभी 40 रुपए था, आज 400 रुपए पर है। बढ़ती महंगाई ने बिगाड़ा आम आदमी की रसोई का बजट - कुंभकरण की नींद सो रही सरकार। नेता विपक्ष ने सब्जी मंडी में ग्राहकों के साथ ही सब्जी विक्रेता दुकानदारों से भी बातचीत की। उन्होंने बढ़ती महंगाई से त्रस्त आम जनता की समस्याएं भी सुनीं। उनका कहना था कि आज देश में भीषण महंगाई के बीच लोग अपनी ज़रूरत की छोटी- छोटी चीजों पर समझौता करने को मजबूर हैं। राहुल गांधी गृहमंत्री अमित शाह मानहानि केस में 26 जुलाई को सुल्तानपुर कोर्ट पहुंचे थे।

मुंबई पुलिस ने 10 बांग्लादेशी नागरिकों को किया गिरफ्तार

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के नवी मुंबई में 10 बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। मंगलवार को एक अधिकारी ने बताया कि नवी मुंबई पुलिस ने बिना किसी दस्तावेज के अवैध रूप से भारत में रहने के आरोप में आठ महिलाओं और दो पुरुषों समेत दस बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई अपराध शाखा की मानव तस्करी विरोधी इकाई की तरफ से सप्ताह के अंत में वाशी और खारघर क्षेत्रों में की गई छापेमारी के बाद की गई। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि बांग्लादेशी पुरुष आम तौर पर मजदूर के रूप में काम करते हैं जबकि महिलाएं घरेलू सहायिका के रूप में काम करती हैं। एक अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार बांग्लादेशी पुरुष और महिलाएं 2023 से अवैध रूप से भारत में रह रहे हैं। वे भारतीय नागरिकता या यात्रा दस्तावेजों का कोई सबूत पेश करने में विफल रहे। अधिकारी ने कहा कि उनमें से कुछ लोग वर्षों से अवैध रूप से भारत में रह रहे हैं। फिलहाल इस मामले में पासपोर्ट अधिनियम और विदेशी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत खारघर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है।

शाह ने तीन नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक की

नयी दिल्ली, एजेंसी। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को यहां राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के साथ तीन नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। गृह मंत्री ने ब्यूरो से नए आपराधिक कानूनों के पूर्ण कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करने को कहा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में ई साक्ष्य, न्याय श्रुति, ई साइन और ई समन जैसे एप्लीकेशन का उपयोग किया जाना चाहिए। तकनीक के इस्तेमाल पर ज़ोर देते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि पूर्व-निर्धारित समयसीमा के अनुसार जांच अधिकारियों के साथ-साथ वरिष्ठ अधिकारियों को अलर्ट भेजने से जांच प्रक्रिया में तेजी लाने में मदद मिलेगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि गृह मंत्रालय और ब्यूरो के अधिकारियों की एक टीम को राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में तकनीकी परियोजनाओं के कार्यान्वयन में वृद्धि करने और हरसंभव सहायता प्रदान करने के लिए वहां का दौरा करना चाहिए।

शिमला में सड़कों पर 3 इंच बर्फ, उत्तर प्रदेश में बारिश

पंजाब में घना कोहरा, एमपी-राजस्थान में 3 दिन ओले गिरने का अलर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी।

देश के 3 राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बर्फबारी का दौर जारी है। बर्फबारी के चलते हिमाचल में दो नेशनल हाईवे समेत 30 सड़कें बंद हो गई हैं। शिमला में सीजन की दूसरी बर्फबारी हुई, जिससे सड़कों पर 3 इंच बर्फ की परत जम गई। इससे सोलंगनाला से अटल टनल रोहतांग लौट रहे टूरिस्ट की गाड़ियां सड़क पर फिसलने लगीं। देर रात तक 1000 से ज्यादा गाड़ियां अटल टनल के साउथ पोर्टल से नॉर्थ पोर्टल तक बर्फ में फंसीं। पुलिस ने गाड़ियां निकालने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया।

अवकाश

क्रिसमस के शुभ अवसर पर प्रेस व कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः अगला अंक 27 दिसम्बर को प्रकाशित होगा।

-व्यवस्थापक

एक राष्ट्र एक चुनाव विधेयक पर जेपीसी की पहली बैठक आठ जनवरी को

नई दिल्ली, एजेंसी। मोदी सरकार की महत्वाकांक्षी पहल 'एक देश एक चुनाव' से संबंधित दो विधेयकों पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की पहली बैठक आठ जनवरी को होगी। संविधान (एक सौ उनतीसवां संशोधन) विधेयक, 2024, जिसे एक देश, एक चुनाव विधेयक के नाम से जाना जाता है के पारित होने के बाद लोकसभा के साथ-साथ राज्य और केंद्र शासित प्रदेश विधानसभाओं के के चुनाव एक साथ कराये जा सकेंगे। यह विधेयक शीतकालीन सत्र के संपन्न होने से पहले लोकसभा में पेश किया गया था और सत्र के अंतिम दिन इसे संयुक्त संसदीय समिति में भेज दिया गया था। सूत्रों के अनुसार इस समिति की पहली बैठक आठ जनवरी को होगी। समिति के 39 सदस्यों में से 27 लोकसभा के तथा 12 राज्यसभा के हैं। समिति को अगले संसद सत्र के आखिरी सप्ताह के पहले दिन तक अपनी रिपोर्ट देनी है।

चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव पर कांग्रेस के आरोप खारिज किये

नयी दिल्ली, एजेंसी। चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मतदाता सूची से लेकर मतदान प्रतिशत में गड़बड़ी के कांग्रेस पार्टी के सभी आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा है कि आयोग ने कांग्रेस के दावों की विस्तार से जांच की है और पार्टी द्वारा लगाये गये आरोप निराधार हैं। चुनाव आयोग ने मंगलवार को कांग्रेस को लिखे पत्र में उसके सभी दावों तथा आरोपों का तथ्यों के आधार पर विस्तार से जवाब दिया। आयोग ने कहा है कि महाराष्ट्र में चुनाव से पहले मतदाता सूची में जानबूझकर न तो नाम जोड़े गये हैं और न ही हटाये गये हैं। आयोग ने कहा है।

कांग्रेस का अविश्वास प्रस्ताव जंग लगा चाकू: उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली, एजेंसी। देश के उप-राष्ट्रपति और राज्यसभा चेयरमैन जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को कहा कि बायपास सर्जरी के लिए कभी सब्जी काटने का चाकू इस्तेमाल नहीं करते हैं। विपक्ष की तरफ से उन्हें राज्यसभा के चेयरमैन पद से हटाने के लिए दिया गया अविश्वास प्रस्ताव खारिज होने के बाद यह उनका पहला बयान है।

कुजामा ओसीपी में आंदोलन के दौरान दो गुट हुए आमने सामने कई राउंड हुई फायरिंग , दहशत में लोग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

झरिया/ धनबाद। बीसीसीएल की लोदना क्षेत्र के कुजामा ओसीपी के ट्रक लोडिंग प्वाइंट मे वर्चस्व को लेकर 18 राउंड चली गोली, हालांकि गोलीबारी में किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है, पुलिस की मौजदूगी में गोलीबारी की घटी घटना, घटना से मजदूरों में दहशत. लोदना क्षेत्र के कुजामा ओसीपी के ट्रक लोडिंग प्वाइंट मे जंमस बच्चा गुट के समर्थकों ने चेकपोस्ट के समीप प्रदूषण व विस्थापन व मेनुवल ट्रक लोडिंग की मांग व वर्चस्व को लेकर विगत एक सप्ताह से कुजामा ओसीपी के देवप्रभा आउटसोर्सिंग के कोयला व ओबी डपींग बंद रखा था , ट्रक लोडिंग चालू करने को लेकर जनता श्रमिक संघ, भाकपा माले, बीसीकेयू के सयुंक्त मोर्चा के लोग अड़े, जिसके बाद कुछ लोगों ने चलाई गोली, सूचना मिलने पर घनुवाडीह, तीसरा, अलकडीहा, बलियापुर ओर लोदना ओपी पुलिस पहुंची, भारी संख्या पुलिस बल तैनात किया गया । स्थिति तनाव पूर्ण बनी हुई है। लोदना एरिया 10 के कुजामा कोलियरी अंतर्गत चल रहे एटीदेव प्रभा आउट सोर्सिंग कंपनी में मंगलवार को दो गुट हुए आमने-सामने इस बीच जमकर हुई कई राउंड हवाई फायरिंग। वही गोली चालन की तड़तड़ाहट सुन सीआईएसएफ एवं क्षेत्रीय थाना के पुलीस संयुक्त रूप से असमाजिक तत्वों को धर दबोचने के लिए उसके पिछे दौड़ा लेकिन जब तक उक्त स्थल टीम पहुंची मौके से सभी फरार हो गए फिर माइंस के दुसरी छोर पर जाकर हवाई फायरिंग किया गया जबतक पुलीस दूसरी छोर पर पहुंची तबतक फायरिंग कर्ता घटना स्थल से फिर फरार हो गए। ऐसा लग रहा था कि किसी लुक्का छुपी का खेल चल रहा है। जिसके पिछे पुलीस टीम पूरी माइंस के इर्द गिर्द चक्कर लगाते रह गई लेकिन पुलीस के पकड़ से उपद्रवी बाहर रहे। घटना क्रम के बारे बताया जाता है कि जनता मजदूर संघ बच्चा गुट के समर्थक कई दिनों से आउटसोर्सिंग कंपनी द्वारा मजदूरों के शोषण करने का आरोप लगाते हुए कई दिनों से धरना प्रदर्शन करने का काम कर रहे थे इस दौरान उत्पादन कार्य को भी ठप करने के लिए उग्र होकर माइंस स्थित पहुच गए। इधर जनता श्रमिक संघ के कार्यकर्ताओ ने आउटसोर्सिंग कंपनी के काम को चालू कराने के लिए युक्त स्थल पहुचे जिसके कारण दोनो पक्ष आमने सामने हो गए वही किसी बड़ी अनहोनी की आशंका को देखते हुए बड़ी संख्या में तीसरा लोदना घनुडीह ओपी पुलिस बल व सी आई एस एफ के पैट्रोलिंग टीम के आलावे कई अधिकारी पहुंच भीड़ को तितर बितर कर दिया जिससे बड़ी अनहोनी होते होते टल गई। तिसरा थाना में जमस बच्चा गुट के प्रीतम रवानी , दूसरे गुट और बीसीसीएल की ओर शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है है।

मेरी पंचायत मेरा अधिकार जन सेवाएं आपके के द्वार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले के विकास खण्ड खैराबाद अन्तर्गत ग्राम पंचायत दारानगर में ग्राम प्रधान लल्ली देवी की अध्यक्षता में तथा ग्राम पंचायत विकास अधिकारी संध्या त्रिपाठी के नेतृत्व में शासन द्वारा संचालित मेरी पंचायत मेरा अधिकार जन सेवाएं आपके द्वार कैम्प आयोजित किया गया। इस कैम्प में शासन द्वारा जो योजनाएं संचालित होती है के बारे में सन्ध्या त्रिपाठी सचिव द्वारा बताया गया।ग्राम विकास पंचायतराज के अन्तर्गत आवास शौचालय निर्माण कार्य परिवार रजिस्टर राशनकार्ड योजना तथा नीतू वर्मा सीएचओ द्वारा स्वास्थ्य विभाग से सम्बन्धित आयुष्मान कार्ड वीपी शुगर मलेरिया डेंगू परिवार नियोजन जाड़ा बुखार आदि के सम्बन्ध में उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए बताया कि उक्त योजनाओं का लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है तथा इन बीमारियों से कैसे बचा जा सकता है के बारे में बताया। वहीं आंगन बाड़ी कार्यकत्री रीतू वर्मा द्वारा पोषाहार वजन बच्चों की देखरेख के बारे में बताया गया। शिक्षा विभाग द्वारा वजीफा किताबें ड्रेस आदि के संबंध में अपने विभाग से संबंधित योजनाओं को बताया गया। अन्य विभागों के कर्मचारियों की अनुपस्थिति होने के कारण शेष विभागों की जानकारी आम जनता को नहीं हो पायी।बताया जा रहा है कि यहीं पांच विभाग ही उपस्थित रहते हैं। लोग यह मनाने के लिए मजबूर हो रहे हैं कि क्या इन विभागों के अलावा अन्य विभाग शासन के निर्देश को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। तभी तो किसी भी चौपाल में पहुंचने की जहमत नहीं उठाते।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल,लोग परेशान

➲ स्वास्थ्य केन्द्र पर जांच नहीं करने का पीड़ित ने लगाया आरोप

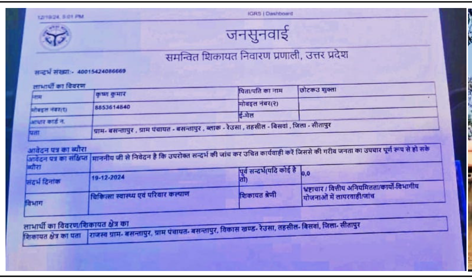

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। लोगों के उत्तम स्वास्थ्य के उद्देश्य से देश एवं प्रदेश की सरकारें तरह-तरह की योजनाएं लागू कर लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने का निरंतर प्रयास कर रही है वहीं इसके विपरीत जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेउसा में स्वास्थ्य सेवाएं बेपटरी हैं। स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत एक पीड़ित मरीज ने अस्पताल प्रशासन पर जांच नहीं करने का आरोप लगाते हुए कार्यवाही की मांग की है। पीड़ित के अनुसार डबल इंजन की सरकार लगातार बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर बड़े-बड़े दावे कर रही है। और लोगों को बेहतर इलाज के लिए सुविधा भी मुहैया करवा रही है।प्रधान मंत्री मोदी का सन 2025 तक भारत को टीवी जैसी भयंकर बीमारी से दूर करने का सपना है।इन्हीं सभी बातों का ध्यान में रखते हुए डबल इंजन की सरकार सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में क्षय रोगियों को नि:शुल्क इलाज कराने के लिए अनेकों योजनाएं भी चला रही है।सरकारी मंशा के अनुसार क्षय रोगियों को लोग गोद ले रहे हैं और उनके इलाज के प्रति जागरूक हैं तो वहीं जनपद के ब्लॉक रेउसा के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरकार की मंशा पर पानी फेरते हुए व अपनी मनमर्जी से लोगों का इलाज करते हुए सरकार की महत्वा कांक्षी योजनाओं में पलीता लगाते हुए नजर आ रहे हैं। दरअसल ब्लॉक रेउसा के ग्राम बसंतापुर निवासी कृष्ण कुमार शुक्ल को इन दिनों टी वी रोग होने जैसी आशंका बनी हुई है। उन्हें भूख न लगने,तेज बुखार आने,हाथ पैरों में दर्द होने, खांसी व अत्यन्त कमजोरी जैसी अन्य समस्याएं हो रही हैं। कृष्ण कुमार के बताने के अनुसार वह जांच कराने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रेउसा गये। तो रेउसा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सकों ने किसी भी प्रकार की कोई जांच नहीं की।और जांचों को बाहर की एक निजी प्राइवेट पैथोलॉजी में कराने के लिए कहा गया। पीड़ित के बताने के अनुसार जब बाहर प्राइवेट जांच कराने को लेकर विरोध किया तो डॉक्टर ने पर्चे पर लिखी जांचे काटते हुए अभद्रता कर यह कहा कि अगर कोई दूसरा व्यक्ति रात्रि के समय आठ बजे भी आ जायेगा, तो उसकी जांच हम करा देंगे लेकिन तुमने बहस की है इसलिए अब तुम्हारी जांच नहीं करेंगे। इतना कहते हुए बाहर भगा दिया। कृष्ण कुमार का कहना है कि समस्त प्रकार जांचे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रेउसा में ही हो जाती हैं तो जांच बाहर से कराने का कारण क्या हो सकता है?पीडित ने मामले की शिकायत सेवता विधायक ज्ञान तिवारी से करने के साथ-साथ जनसुनवाई पोर्टल पर भी संदर्भ संख्या 40015424086669 से की है। लोग बताते हैं कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रेउसा को सेवता विधायक ज्ञान तिवारी ने बच्चा मान कर गोद लिया हुआ है। फिर भी स्वास्थ्य केंद्र पर इस प्रकार की लापरवाही समझ से परे है। फिलहाल अब देखना यह होगा कि मामले की जांच करा कर किस पर क्या कार्रवाई होती है। या मामला यूं ही हवा हवाई हो जाएगा।

अखिल भारतीय अधिकार संगठन द्वारा पच्चिस दिसंबर को किया जाएगा विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। अखिल भारतीय अधिकार संगठन इस वर्ष भी पच्चिस दिसंबर 2024 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन करेगा। संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संदीप मिश्रा ने बताया कि कार्यक्रम सीतापुर जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, परसेंडी में आयोजित किया जाएगा।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर आलोक चांटिया होंगे। कार्यक्रम के तहत कुष्ठ रोगियों और हाथी पांव रोगियों के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इसके साथ ही रोगियों के बीच कंबल का वितरण और भोजन वितरण भी किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य समाज के उपेक्षित वर्ग को सम्मान और सहायता प्रदान करना है,साथ ही इन बीमारियों के प्रति जागरूकता फैलाना है।

किसानों-व्यापारियों के हित में काम करती भारतीय स्टेट बैंक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले के कस्बा मिश्रिख में कालेन्द्री गेस्ट हाउस के समीप भारतीय स्टेट बैंक के नये परिसर का फीता काटकर व दीप प्रज्जलित कर लखनऊ सर्किल के महाप्रबंधक अनिल कुमार ने शुभारम्भ किया।साथ में उप महा प्रबंधक धीरज कुमार एवं क्षेत्रीय प्रबंधक नीरज कुमार राय एवं मुख्य प्रबंधक अभिलाषा मिश्रा,राजेश शुक्ला ने भी दीप प्रज्जलित किया। इस मौके पर मिश्रिख शाखा के प्रबंधक अमित कुमार सिंह ने आये हुये सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। लखनऊ से महाप्रबंधक ने समस्त स्टाप से एक एक कर परिचय लिया और काम के प्रति हमेशा तत्पर रहने के लिए कहा साथ में किसी भी समस्या के लिए कोई भी जानकारी पूछने व प्राप्त करने के लिए हमेशा उपस्थित रहने का विश्वास दिलाया। उन्होंने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक हमेशा से अग्रणी बैंकों में शामिल रही है।वो किसानों और व्यापारियों के हित में काम करती है।स्टेट बैंक भारत देश में परिचालित बैंकों में प्रमुख बैंक है।जो लोन, बचत खाता,चालू खाता एफडी आदि बैंकिंग सेवायें प्रदान करती है।बैंक स्टाप में शामिल कामाक्षी राय,श्रवण कुमार राठौर,श्वेता सिंह, राजेन्द्र पांडेय,ममता तिवारी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस मौके पर जिले की तहसील मिश्रिख के वरिष्ठ व्यापारी मुकेश माहेश्वरी, आयूष वैश्य,सुशील चन्द्र गुप्ता,शानू अग्रवाल,आदर्श शुक्ला,रंजन त्रिवेदी,प्रशांत त्रिपाठी आदि व्यापारी मौजूद रहे।

शांतिपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ लॉयर्स एसोसिएशन का चुनाव

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की तहसील बिसवां में बिसवां लायर्स एसोसिएशन के 2025 की वार्षिक कार्य कारिणी का मतदान बड़ी गहमागहमी के बीच सम्पन्न हुआ। मिली जानकारी के अनुसार बिसवां लायर्स एसोसिएशन के चुनाव अधिकारी लालजी वर्मा, सहायक चुनाव अधिकारी ललित प्रकाश शर्मा के कुशल नेतृत्व में एक सौ चौबिस अधिवक्ताओं में से एक सौ इक्किस अधिवक्ताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर कार्यकारिणी का चुनाव किया। इस चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए कमलेन्द्र बाजपेयी सात मतों से निर्वाचित हुए उनको चौंसठ मत प्राप्त हुए, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी अशोक कुमार रस्तोगी को सत्तावन मतों पर ही संतोष करना पड़ा। इसी प्रकार सचिव पद पर सत्यप्रकाश सिंह पन्द्रह मतों से निर्वाचित हुए उनको इक्यावन मत मिले,जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी कमल मनोरम वर्मा को छत्तिस मत व रामकृष्ण दीक्षित को चौंतिस मत प्राप्त हुए। वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर नागेन्द्र प्रताप सिंह,ज्येष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर सुशील कुमार शुक्ल कनिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर रोहित शाह,कोषाध्यक्ष के पद पर विनीत कुमार श्रीवास्तव को चुनाव आयोग द्वारा निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। विजयी प्रत्याशियों को उनके समर्थकों ने फूल मालाओं व मिठाई बांटकर बधाई दी।

चारागाह में दर्ज सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने की तहसीलदार से की शिकायत

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। सरोजनीनगर के मिर्जापुर लटव्वा गांव निवासी सुनील कुमार ने ग्राम प्रधान के खिलाफ चारागाह में दर्ज सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने की सरोजनीनगर तहसीलदार से शिकायत की है। सुनील का कहना है कि गांव में मौजूद भूमि गाटा संख्या -57 रकबा, 2.4020 हेक्टेयर जमीन राजस्व अभिलेखों में चारागाह में दर्ज है। इस पर गांव के प्रधान द्वारा अतिक्रमण किया जा रहा है। आरोप लगाया कि चकरोड निकालने के बहाने उस पर अवैध निर्माण करवाने का बराबर प्रयास किया जा रहा है। गांव के लोगों द्वारा बार-बार मना करने पर भी नहीं मानते। उन्होंने कहा है कि चकरोड निकालने के बहाने किए जा रहे अवैध निर्माण को रोका नहीं गया तो भारी नुकसान होगा। उन्होंने बताया है कि बीती 21 दिसंबर को पंचायती राज विभाग में भी इसको लेकर शिकायती पत्र दिया गया, लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई।

महिला ने देवर और उसकी पत्नी पर मारपीट की दर्ज कराई रिपोर्ट

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। बिजनौर के बलवंत खेड़ा, माती निवासी महिला प्रेम कुमारी ने अपने देवर वीर बहादुर और उसकी पत्नी जय देवी के खिलाफ मारपीट व जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। प्रेम कुमारी का कहना है कि सोमवार करीब 10:30 बजे वह अपने घर से खेत पर जा रही थी। तभी वीर बहादुर और उसकी पत्नी जय देवी ने रास्ता रोककर उसे मारा पीटा और जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि आरोपी उसकी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। फिलहाल बिजनौर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

संदिग्ध परिस्थितियों में किशोर लापता,गुमशुदगी दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बिजनौर इलाके से 3 दिन पहले एक किशोर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। काफी खोजबीन के बाद परिजनों ने उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई है। बिजनौर के नटकुर निवासी सत्य प्रकाश के मुताबिक उनका 13 वर्षीय बेटा सौरभ अवस्थी रविवार सुबह करीब 8 बजे बिना बताए घर से कहीं चला गया। देर शाम तक वापस न लौटने पर परिजनों ने उसकी रिश्तेदारी व परिचितों के यहां काफी खोजबीन की, लेकिन उसका कहीं अता-पता नहीं चल सका। इसके बाद सत्य प्रकाश ने बिजनौर थाने में अपने बेटे सौरभ अवस्थी की गुमशुदगी दर्ज कराई। पुलिस मामला दर्ज कर सौरभ का पता लगा रही है।

भाजपा नेता शैलेश सिंह को दी गई श्रध्दांजलि

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

झरिया/ धनबाद। देशबंधु सिनेमा के समीप भारतीय जनता धनबाद जिला ओबीसी मोर्चा के पूर्व जिला अध्यक्ष शैलेश सिंह चंद्रवंशी के आकस्मिक निधन को लेकर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित विधायक रागिनी सिंह दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित की इसके उपरांत भारतीय जनता पार्टी सभी मोर्चा के सभी पदाधिकारी ने बारी-बारी से पुष्पांजलि अर्पित की इस दौरान गगन भेदी नारों से शैलेश सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शैलेश सिंह अमर रहे के नारे लगाए विधायक श्रीमती सिंह ने कहा कि उनका इस तरह से चले जाना एक बड़े भाई के तौर पर मेरे लिए अपूर्णीय क्षति है हम लोगों ने अच्छे व्यक्तिव के धनी संगठन का प्रखर वक्ता को खोया है इसकी भरपाई कर पाना संभव नहीं है लेकिन उनके आदर्शों पर चलना ही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी पूर्व नगर अध्यक्ष अरुण साहू ने कहा कि अच्छे सह पाठी को खोया है इनके द्वारा बराबर समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करके पार्टी के प्रति रणनीति तय की जाती थी आज उनके अचानक चले जाने से कमी महसूस हो रही है जिला उपाध्यक्ष विष्णु त्रिपाठी ने कहा कि हमारे लिए एक अभिभावक के रूप में शैलेश जी थे हर समस्याओं के प्रति उनसे वार्ता करने के बाद ही आगे की रणनीति तय की जाती थी आज हमारे बीच नहीं है लेकिन यादें बनकर हम सबों के बीच छाए रहेंगे भाजपा के वरिष्ठ नेता महेंद्र सिंह ने कहा कि हमने अपने बचपन का साथी को खोया है प्रत्येक दिन मुलाकात होने के बाद चाय पर चर्चा होने के बाद ही घर की ओर प्रस्थान करते थे या सिलसिला लगातार चलता था विधानसभा लोकसभा चुनाव के दौरान उनके द्वारा बनाई गई रणनीति के तहत हम लोगों ने लोकसभा और विधानसभा दोनों में जीत हासिल की , रागिनी सिंह ने कहा सैलेश जी को जाने से खासकर झरिया ही नहीं पुरे लोकसभा में उनकी कमी खलेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व अरुण साहू एवं वर्तमान अध्यक्ष अवधेश साहू ने किया कार्यक्रम का संचालन भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अरुण गोस्वामी ने किया इस दौरान महेंद्र सिंह बाबू जैना महावीर पासवान गंगाराम श्याम श्याम सुंदर सोनकर परमेश्वर सोनकर उमेश यादव अभिषेक पांडे तरुण राय बच्चा कुमार गिरी अर्जुन निषाद दया शंकर वर्मा अमित साहू सुनील साहू गौतम सेन पिक कुमार सिंह मयूरी द्विवेदी उमा चरण भट्टाचार्य राहुल सोनी मुन्ना पांडे दिलीप आडवाणी वीरेंद्र भैया जितेंद्र सिंह मनोज प्रसाद विनोद साहू दिलीप वर्मा अशोक बरनवाल संजय कुमार प्रीतम शर्मा अर्जुन साहनी निर्मल अग्रवाल राजेश अग्रवाल विश्वनाथ साहब दिलीप गिरी अजय शाह संजय मंत्री अरुण जायसवाल संजीत केसरी राजमाली सरवन राय राजकुमार अग्रवाल, थानेश्वर गुप्ता , महेश गुप्ता स्वरूप भट्टाचार्य अरविंद बनर्जी पाठक जी व झरिया के सैकड़ों कार्यकर्ता और पांचो मंडल अध्यक्ष श्रद्धांजलि सभा में शामिल थे। कार्यक्रम में 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धा सुमन अर्पित की गई कार्यक्रम समापन होने के बाद धनबाद के लोकप्रिय सांसद ढुल्लू महतो पहुंचे उन्होंने भी अपनी श्रद्धांजलि सुमन अर्पित करते हुए कहा कि लोकसभा सत्र के दौरान मैं दिल्ली में प्रवास कर रहा था जिसके कारण समय पर उपस्थित नहीं हो सका लेकिन मेरी संवेदना भाई शैलेश सिंह के साथ है।

जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा ने विभागीय कार्यों की समीक्षा की दिए निर्देश

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता कन्हैया सिंह

जमुई/पटना - डीएम अभिलाषा शर्मा ने समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में विभिन्न विभाग के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर कार्यों की समीक्षा की और जरूरी निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने मद्य निषेध के कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि जमुई जिला अन्तर्राज्यीय सीमा से सटा है। इसके चलते मादक पदार्थों की अवैध आवागमन पर रोक के लिए सख्त कदम उठाएं। इसके लिए जरूरी है कि परिवहन एवं मद्य निषेध विभाग आपसी सामंजस्य के साथ कार्य करें। जिले के सभी चेक पोस्ट पर अनवरत सघन जांच की जाए। उन्होंने मद्य निषेध अधीक्षक को निदेशित करते हुए कहा कि

जिला अंतर्गत सभी चेक पोस्ट के कर्मियों एवं पदाधिकारियों की सूची बनाएं और उसे सभी नामित चेक पोस्ट के साथ साझा करें। इसके अलावे अन्य संवेदनशील स्थानों को भी चिन्हित कर वहां पुलिस बल के साथ नियमित रूप से गस्ती एवं छापामारी अभियान चलाएं ताकि अवैध मादक सामग्रियों के व्यापार पर रोक लग सके। जिलाधिकारी ने जिला अवर निबंधक को निदेशित किया कि राजस्व वसूली को हल्के में ना लें। योजनाबद्ध ढंग से वसूली बढ़ाएं। इसके लिए यथोचित कदम उठाएं। डीएम ने खनन और परिवहन विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि अवैध खनन और परिवहन पर अंकुश लगाने के लिए हर संभव प्रयास करें। उन्होंने कहा कि अवैध खनन वाले जगहों की पहचान कर वहां नियमित छापेमारी करें। इस कार्य के लिए देय दायित्वों का निर्वहन किया जाना है। जिलाधिकारी ने अन्य संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि अपने-अपने विभाग की योजनाओं और कार्यक्रमों को समय-सीमा के भीतर पूर्ण करें। कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उत्पाद अधीक्षक सुभाष कुमार , अवर निबंधक विनीत कुमार , डीटीओ मो. इरफान आदि विभागीय अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

शहादत दिवस के मौके पर वीर बाल दिवस कार्यक्रम का हुआ आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। भारतीय जनता पार्टी नगर दो के द्वारा गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत दिवस के अवसर पर स्थानीय मुंशीगंज के एक विद्यालय में वीर बाल दिवस के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्य क्रम का संयोजन विजय कुमार अवस्थी ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के निवर्तमान जिला अध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा को पटका पहनाकर स्वागत किया गया।कार्यक्रम का शुभारम्भ अचिन मेहरोत्रा सहित सभी कार्यकर्ताओ के द्वारा सिक्खों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह सहित उनके पुत्रों के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रृद्धांजलि अर्पित कर किया गया। संगोष्ठी के दौरान मुख्य अतिथि अचिन मेहरोत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा और मार्ग दर्शन से विगत वर्ष गुरु गोबिन्द सिंह महाराज के दोनों छोटे साहिबजादों, बाबा जोरावर सिंह और फतेहसिंह के बलिदान दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मान्यता मिली, जिसके तहत वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। अधिवक्ता विजय कुमार अवस्थी ने कहा वीर बाल दिवस खालसा के चार साहिबजादों के बलिदान को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है।अंतिम सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के छोटे बच्चों ने अपनी आस्था अस्मिता की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। शिव बालक त्रिवेदी ने कहा कि गुरु गोबिंद सिंह के चारों साहिबजादे धर्म के लिए शहीद हो गए,जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए वीर बाल दिवस मनाने की शुरुआत की गई है। संगोष्ठी के अन्त में पूर्व नगर अध्यक्ष प्रकाश सिंह ने सभी के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से आकाश राय,ऋषभ त्रिवेदी, सचिन त्रिपाठी,अंजनी शुक्ला,शिव कुमार शास्त्री, प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव, कमलेश गुप्ता,अनिल किशोर श्रीवास्तव,आकाश मिश्रा,अनिल निषाद,राहुल अवस्थी सहित विद्यालय के छात्र छात्राएं व शिक्षक उपस्थित रहे।

ग्रामीणों ने प्रभारी प्रधान अध्यापक पर गंभीर आरोप लगाते हुए की कार्यवाही की मांग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की विकास खण्ड बेहटा के के एक गांव के ग्रामीणों ने विद्यालय में तैनात प्रभारी प्रधानाध्यापक पर गंभीर आरोप लगाते हुए कार्यवाही की मांग की है साथ ही कार्यवाही न होने की स्थिति में भारतीय हिंदू परिषद के साथ मिलकर धरना प्रदर्शन की भी चेतावनी दी है। जानकारी के अनुसार जिले के विकास खण्ड बेहटा के प्राथमिक विद्यालय खैरी पट्टी में तैनात प्रधान अध्यापक मुमताज अली पर ग्रामीणों ने आरोप लगाकर बीआरसी बेहटा को प्रार्थना पत्र देकर कार्यवाही की मांग की है। प्रार्थना पत्र में ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि प्रभारी प्रधान अध्यापक ज्यादा तर विद्यालय से अनुपस्थित रहते हैं और वह अपने बदले में प्राइवेट तौर पर दो शिक्षिकाओं की नियुक्ति कर रखी है वह विद्यालय में आकर अध्यापन कार्य कर रही हैं।इस सम्बन्ध में ग्रामीणों द्वारा जब प्रभारी प्रधानाध्यापक मुमताज अली से बात की गई तो उन्होंने छेड़छाड़ जैसी गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करवाने की धमकी ग्रामीणों को दी। दबी जुबान कुछ ग्रामीणों ने शिक्षार्थियों के मध्यान्ह भोजन में कीड़े निकालने की भी कही है। खैरी पट्टी निवासी सुनील कुमार अवस्थी ने इस बात को लेकर भारतीय हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं के साथ बीआरसी केन्द्र बेहटा पहुंचकर सम्बन्धित अधिकारियों को लिखित शिकायती पत्र देकर जांच कर उचित कार्यवाही किए जाने की मांग की है,तो वहीं भारतीय हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने यह भी बताया है कि यदि चौबिस घंटे के अन्दर सम्बन्धित अधिकारियों के द्वारा इस मामले में उचित कार्यवाही नहीं की जाती है तो हम लोग जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सीतापुर को लिखित शिकायती पत्र देकर कार्यवाही करने की मांग करेंगे फिर भी अगर सम्बन्धित अधिकारियों के द्वारा इस मामले में जांच कर उचित कार्यवाही नहीं की जाती है तो फिर जिले पर बड़ा धरना प्रदर्शन व शिक्षा हित में आंदोलन करने पर बाध्य होंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी सीतापुर शासन व प्रशासन की होगी। इस मौके पर भारतीय हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष व जिला सहसंयोजक व जिला महामंत्री सहित भारी संख्या में भारतीय हिंदू परिषद के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सिधौली के ऐम कॉलेज बाड़ी में हुआ दो दिवसीय कार्निवल का सफल आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। सिधौली कस्बे में सीबीएसई बोर्ड से संबद्ध (नर्सरी से कक्षा बारह तक) ऐम कॉलेज बाड़ी में दो दिवसीय कार्निवल का आयोजन उत्साह और भव्यता के साथ किया गया। यह कार्यक्रम छात्रों, अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के लिए एक अद्भुत अनुभव रहा। इस आयोजन का उद्घाटन उपजिला अधिकारी अनिल कुमार ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सिधौली के क्षेत्राधिकारी कपूर कुमार की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।समापन पर कॉलेज के सचिव,एड. एम.एस. फरीदी ने आयोजन को सफल बनाने में सभी प्रतिभागियों, आयोजकों और कॉलेज प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया। मुख्य आकर्षण कार्निवल में फूड स्टॉल, गेम्स स्टॉल और विभिन्न मनोरंजक गतिविधियां मुख्य आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रहीं। बच्चों,युवाओं और बड़ों ने इनका भरपूर आनंद लिया। यह आयोजन न केवल मनोरंजन का माध्यम बना, बल्कि समुदाय को एक साथ जोड़ने और सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहित करने का जरिया भी साबित हुआ। इस प्रकार के आयोजनों से छात्रों,युवाओं को अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता दिखाने का बेहतरीन मंच मिलता है। साथ ही इस प्रकार की पहलें स्थानीय समुदाय को एक जुट करने में अहम भूमिका निभाती हैं। कॉलेज प्रशासन ने इस आयोजन की सफलता को छात्रों अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की भागीदारी का नतीजा बताया और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेक प्रधानाचार्य,डॉक्टर, वकील और गांवों के प्रधान सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
लखनऊ से प्रकाशित
बुधवार, 25 दिसम्बर, 2024

गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहेब पर की गई टिप्पणी के विरोध में बीएसपी कार्यकर्ताओं ने राजधानी में किया प्रदर्शन

❑ मायावती ने बीएसपी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का जताया आभार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर की गई टिप्पड़ी के खिलाफ बीएसपी सुप्रीमों मायावती द्वारा 24 दिसंबर को देशव्यापी प्रदर्शन के आह्वान पर बीएसपी कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को हजरत में अम्बेडकर प्रतिमा पर प्रदर्शन किया 7 हल्की बूंदा - बांदी के बीच हाथों में बसपा का झंडा लेकर पहुंचे कार्यकर्ताओं ने गृह मंत्री के विरोध में जमकर नारेबाजी की एवं उनसे अपने बयान को वापस लेने एवं माफी माँगने की मांग की 7 मायावती ने उनके आह्वान पर आज देशभर में प्रदर्शन कर रहे बीएसपी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया7 मायावती ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए एक्स पर लिखा ‐ आज पूरे देश में बीएसपी के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं व परमपूज्य बाबा साहेब डा भीमराव अम्बेडकर के उन सभी अनुयाइयों का अति-आभार, शुक्रिया व धन्यवाद जिन्होंने श्री अमित शाह द्वारा किए गए बाबा साहेब के अनादर के विरुद्ध सभी जिला मुख्यालयों पर शान्तिपूर्ण सफल धरना-प्रदर्शन किया। ऐसे प्रदर्शन समस्या का स्थाई हल नही, सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त कर शासक वर्ग बनकर ही मुक्ति व सम्मान संभव ‐ मायावती बाबा साहेब विरोधी टिप्पणी वापस नहीं लेने व पश्चाताप नहीं करने पर बीएसपी के आह्वान पर आयोजित ऐसे प्रदर्शन आदि समस्या का स्थाई हल नहीं, बल्कि इसके लिए बहुजनों को सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त करके शासक वर्ग बनकर ही अपना उद्धार स्वंय करने योग्य बनना होगा तभी मुक्ति व सम्मान संभव। उन्होने कहा कि आज के सफल आन्दोलन से यह साबित है कि भाजपा हो या कांग्रेस या कोई अन्य पार्टी 'बाबा साहेब का अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान'। वास्तव में लोगों के 'अच्छे दिन' अर्थात् जनहित व जनकल्याण-युक्त देश निर्माण हेतु बाबा साहेब के संविधान पर पूरी निष्ठा व ईमानदारी से अमल करना जरूरी। साथ ही, अहमदाबाद में बाबा साहेब की प्रतिमा क्षतिग्रस्त करने व छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में एक दलित की पीट कर की गई हत्या अति-दुखद व शर्मनाक उस गरीब पर चावल चोरी का आरोप है तो क्या वह पीड़ित गरीबी व भूख से बदहाल करोड़ों लोगों में से एक नहीं है? सरकार ऐसे लोगों का जरूर सहारा बने।

ट्रक चालक व क्लीनर के खिलाफ मारपीट और जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। सरोजनीनगर के बेहसा निवासी विश्वजीत मौर्य ने ट्रक चालक अवधेश कुमार व उसके क्लीनर के खिलाफ गाली गलौज, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। विश्वजीत मौर्य का कहना है कि सोमवार को उनका छोटा भाई आकाश मौर्य ट्रांसपोर्ट नगर, मौरंग मंडी से ट्रक (यूपी 32 डीएन 8488) में गिट्टी लेकर अंसल गया था। वापस लौटने पर सिहारी देवी मंदिर के पास गिट्टी की नाप को लेकर ट्रक ड्राइवर अवधेश कुमार से विवाद हो गया। जिस पर अवधेश और उसका क्लीनर गाली देने लगा। विरोध करने पर दोनों ने लाठी डंडों से मारपीट कर आकाश को घायल कर दिया। बाद में दोनों ने जान से मारने की धमकी दी और फरार हो गए। फिलहाल इस मामले में सरोजनीनगर पुलिस ने विश्वजीत की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

निजी कंपनी पर ट्रैक्टर चालक को दबंगों ने पीटा मुकदमा दर्ज

➪ निजी कंपनी साइट के आसपास की जमीनों का एसडीम मोहनलालगंज ने किया निरीक्षण
➪ एसडीम मोहनलालगंज सहित तहसीलदार ने आरोप लगाने वाले को बताया निराधार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

मोहनलालगंज। मोहनलालगंज थाना के अंतर्गत सुल्सामऊ हिलगी स्थित निजी कंपनी के एक प्लाटिंग साइड पर ट्रैक्टर से लेबलिंग का कार्य किया जा रहा था, तभी वहां पर पहुंचे दबंग किस्म के शैलेश सिंह पुत्र केतार सिंह निवासी ललूमर ने ट्रैक्टर रोककर ट्रैक्टर चालक आकाश गौतम को अपने पास बुलाया और गंदी गंदी गालियां देने लगा ट्रैक्टर चालक द्वारा विरोध करने पर ट्रैक्टर चालक आकाश गौतम की पिटाई कर दी चालक की पिटाई होते देख जनपद औरैया निवासी ट्रैक्टर मालिक उदयवीर सिंह ने वहां पहुंचकर ट्रैक्टर चालक को किसी तरह से बचाया और लोगों को आता देख शैलेश सिंह जान से मारने की धमकी देकर भाग निकला। इंस्पेक्टर अमर सिंह ने बताया कि ट्रैक्टर मालिक उदयवीर सिंह की तहरीर के आधार पर सुसंगत धाराओ में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आरोपी की तलाश जारी है। निजी कंपनी ने बताया कि आय दिन शलेश सिंह सहित अन्य दबंग अपने जमीन खरीदने को लेकर निजी कंपनी पर दबाव बना रहा है और निजी कंपनी के कर्मचारियों को आय दिन गाली गलौज एवं धमकी दे रहा है, जिसकी रिकॉर्डिंग सुरक्षित है। इस मौके पर एडिशनल कमिश्नर, मोहनलालगंज उपजिलाधिकारी बृजेश कुमार वर्मा, तहसीलदार शशांक उपाध्याय सहित लेखपाल पहुंचे और शैलेश सिंह द्वारा किए गए शिकायत अनुसार जायजा लिया और एसडीम मोहनलालगंज बृजेश कुमार वर्मा ने बताया कि शैलेश सिंह द्वारा किए गए आईजीआरएस शिकायत बेबुनियाद और निराधार है। किसी प्रकार का निजी कंपनी का किसान पर दबाव नहीं पाया गया। शैलेश सिंह को खेती करने और आने जाने के लिए रास्ता छोड़ा गया है ।

लुलु मॉल पर क्रिसमस डे पर हुआ रंगो रंग कार्यक्रम

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लुलु हाइपरमार्केट आई सपोर्ट फाउंडेशन के द्वारा क्रिसमस पर किया कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) की पहल करते हुए ऑटिस्टिक बच्चों के कल्याण और विकास के लिए समर्पित संस्था %आई सपोर्ट फाउंडेशन% के साथ क्रिसमस पर्व को पूरे हर्षोल्लास से मनाया। इस सार्थक पहल के हिस्से के रूप में, लुलु हाइपरमार्केट ने फाउंडेशन के परिसर में आयोजित एक क्रिसमस कार्यक्रम में बच्चों और उनके परिवारजनों के मध्य इंटरैक्टिव गतिविधियाँ, मनोरंजन और उपहार वितरण किया जिससे बच्चों में खुशी की लहर दौड़ गयी। इस अवसर पर सौरभ सिंह वर्मा-एचआर प्रमुख, सेब्लेन हुसैन-पीआर व मीडिया मैनेजर सुनील शर्मा, डीजीएम-लुलु हाइपरमार्केट, ने कहा कि लुलु हाइपरमार्केट में, हम खुशियाँ बाँटने में विश्वास रखते हैं। इस क्रिसमस उत्सव पर %आई सपोर्ट फाउंडेशन% के साथ यह कार्यक्रम वास्तव में एक आनंदप्रद अनुभव रहा। ये बच्चे अपनी अद्वितीय क्षमताओं से हमें प्रेरित करते हैं और हम उनके चेहरे पर मुस्कान लाकर गर्वान्वित व सन्तुष्ट महसूस कर रहे हैं। आई सपोर्ट फाउंडेशन% की निदेशक सुश्री बॉबी रमानी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे लुलु हाइपरमार्केट की दयालुता और उदारता की सराहना करती हैं कि बच्चों और उनके परिवारों के लिए खुशी लेकर आया, जिससे लोगों में जागरूकता तथा ऑटिज्म के लिए सामुदायिक समर्थन की भावना बढ़ती है। इस पहल के माध्यम से, लुलु हाइपरमार्केट सामाजिक जिम्मेदारी, समावेशिता और सामुदायिक जुड़ाव के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि करता है, साथ ही साथ संगठन उन उद्देश्यों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है जो समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

पुलिस मुठभेड़ में 25 हज़ार का इनामी बदमाश ढेर, बैंक चोरी का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

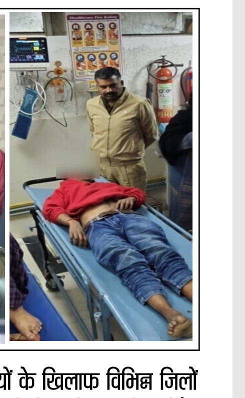

लखनऊ। थाना चिनहट क्षेत्र में देर रात पुलिस और अपराधियों के बीच हुई मुठभेड़ में 25 हजार के इनामी बदमाश सोविन्द बिंद 25 वर्षीय मारा गया। यह शातिर अपराधी लंबे समय से बैंक चोरी और गंभीर अपराधों में लिप्त था। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में घायल होने के बाद उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ की सख्त कार्रवाई ने इंडियन ओवरसीज बैंक, मटियारी में हुई दीवार तोड़कर लॉकर चोरी की घटना में शामिल एक बड़े शातिर गिरोह का पर्दाफाश किया। 23 दिसंबर की रात थाना चिनहट क्षेत्र में किसान पथ स्थित जलसेतु तिराहे पर हुई मुठभेड़ में 25 हजार के इनामी अपराधी सोविन्द कुमार बिंद पुलिस की जवाबी कार्रवाई में मारा गया। आपको बताते चलें सोविन्द कुमार बिंद अपने गिरोह के साथ मिलकर बैंक के 42 लॉकर तोड़कर भारी मात्रा में सोने-चांदी की ज्वैलरी और नगदी चुराने में शामिल था पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी का माल, अवैध देसी पिस्टल, और कारतूस बरामद किए। यह गिरोह लंबे समय से बैंक चोरी और लूटपाट जैसी घटनाओं में सक्रिय था। पुलिस ने गिरोह के तीन सदस्यों को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था- जैसे अरविंद कुमार (22, वर्षीय, बलराम कुमार (28, वर्षीय, कैलाश बिंद (28, वर्षीय यह सारे बिहार के ही निवासी हैं। जिसमे से मुठभेड़ के दौरान गिरोह के अन्य सदस्य मिथुन कुमार, सन्नी दयाल और विपिन कुमार वर्मा (सीतापुर,मौके से फरार हो गए था। उनकी तलाश में पुलिस की विशेष टीमें जुटी हुई हैं। वहीं घटना के महज 24 घंटे के भीतर पुलिस ने चोरी हुए माल की बड़ी मात्रा में बरामदगी की और मुख्य अपराधियों को दबोच लिया। बरामद माल में देसी तमंचा और खोखा कारतूस सोने के आभूषण- कंगन- 50 अदद,अंगूठी- 67 अदद,चेन- 57 अदद,हार- 45 अदद,अन्य आभूषण- 876 ग्राम (कुल 4.093 किलोग्राम) जिसमे चांदी के आभूषण और सिक्के शामिल है जैसे 169 अदद चांदी सिक्के,6 अदद प्लेट कुल मिलाकर 10.3 किलोग्राम और ?9,17,606 नगदी भी। इन अपराधियों के खिलाफ विभिन्न जिलों में गंभीर धाराओं में कई मुकदमे दर्ज हैं। यह गिरोह बैंक चोरी और अन्य आपराधिक वारदातों में सक्रिय था। यह कार्रवाई पुलिस के अपराध पर नियंत्रण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इस घटना ने पुलिस की तत्परता और अपराध के खिलाफ सख्त रुख को दर्शाया है। कमिश्नरेट पुलिस ने समाज में कानून-व्यवस्था को बनाए रखने की अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। पुलिस का कहना है कि अपराध के खिलाफ यह अभियान जारी रहेगा,

समाचार

लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार राजेश सिंह श्रेयस को मिला मुंशी प्रेमचंद कथा सम्मान 2024

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच के ग्यारहवें अखिल भारतीय साहित्योत्सव एवं सम्मान समारोह कार्यक्रम में लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार राजेश सिंह श्रेयस को मुंशी प्रेमचंद कथा सम्मान 2024 (? 5000/) उनके उपन्यास चाक सी नाचती हुई जिंदगी % के लिए प्राप्त हुआ द्य यह सम्मान अत्यंत ही गौरवपूर्ण सम्मान है द्य उल्लेखनीय है कि श्रेयस जी के पहले उपन्यास %तुमसे क्या छुपाना% के लिए राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उत्तर प्रदेश से श्री श्याम सुंदर दास पुरस्कार 2023 (? 100000/-) मिला था द्य उनके दूसरे उपन्यास को भी भारत की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच (पंजी0 न्यास) के माध्यम से पुरस्कार प्राप्त हुआ द्य इस तरह से उनके दोनों ही उपन्यास पुरस्कारों से सम्मानित हुए द्य ये दोनों सम्मान,उनके लेखन को, विशेष रूप से हिंदी गद्य की उपन्यास विधा में लेखन को प्रोत्साहित करेंगे एवं और भी अधिक उत्कृष्टता से लिखने के लिए प्रेरित करेगें द्य उल्लेखनीय है कि राजेश सिंह श्रेयस बहुत ही मिलनसार सहृदय कवि हैं जो भी एक बार मिला वह उनका अभिन्न मित्र बन ही जाता है। आपकी अब तक करीब एक दर्जन पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।विभिन्न साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा कई दर्जन सम्मान प्राप्त हुए है।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ चोर गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। दक्षिणी जोन के पुलिस एडीसीपी राजेश कुमार यादव एवं किरण यादव पुलिस एसीपी के निर्देशा अनुसार थाना सुशांत गोल्फ सिटी द्वारा चोरों को धर पकड़ का अभियान चलाया जा रहा था।अवध विहार चौकी प्रभारी विपिन कुमार एवं सहायक प्रभारी रामप्रवेश साहनी सहायक प्रभारी अंकुर हेड कांस्टेबल विक्रम सिंह के साथ मालक अंडर पास के पास वाहन चेकिंग किया जा रहा था जो चेकिंग के दौरान एक व्यक्ति मोटरसाइकिल लेकर आ रहा था जो पुलिस को देखते ही भगाने का प्रयास किया जो पुलिस द्वारा पीछा करके पूछताछ किया तो गाड़ी का कागज नहीं दिखा सका जो उनके पास मोटरसाइकिल स्प्लेंडर प्लस यूपी 32 जे.वाई. 4210 के साथ गिरफ्तार किया गया प्रभारी द्वारा बताया गया कि जब व्यक्ति से जब पूछताछ की गई तो अपना नाम मनीष रावत पुत्र राम लखन रावत निवासी गुरुबक्स खेड़ा थाना बछरावां जिला रायबरेली का रहने वाला बताया जो वह दो दिन पहले मोटरसाइकिल को चोरी किया था वह बेचने के लिए निकला था जो मालक अण्डरपास पर पुलिस द्वारा चेकिंग कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है जो कानूनी कार्यवाही करके उसे जेल भेज दिया गया है

मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने की विभागीय कार्यों की समीक्षा दिए निर्देश

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता कन्हैया सिंह

जमुई /पटना। मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने राज्य में विकास कार्यों में पारदर्शिता के साथ इसे टाइम लाइन के भीतर पूरा किए जाने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए समीक्षा की और वांछित निर्देश दिए। जिला कलेक्टर अभिलाषा शर्मा के नेतृत्व में समाहरणालय स्थित उनके कार्यालय प्रकोष्ठ में नामित विभागों के पदाधिकारियों ने वीडियो कांफ्रेंसिंग में उपस्थिति दर्ज की और जरूरी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मुख्य सचिव ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग , निगरानी विभाग , निर्वाचन विभाग , वाणिज्य कर विभाग , राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग , वित्त विभाग , खान एवं भू तत्व विभाग , मद्य निषेध उत्पाद एवं निबंधन विभाग , विज्ञान प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग , परिवहन विभाग , खेल विभाग , कला संस्कृति एवं युवा विभाग तथा विधि विभाग के कार्यों की समीक्षा की और प्रगति प्रतिवेदन का अवलोकन किया। उन्होंने संचालित योजनाओं को गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण पारदर्शिता के साथ टाइम लाइन के भीतर पूरा किए जाने का निर्देश देते हुए कहा कि कार्य में कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने मौजूद विभागीय अधिकारियों को समय-सीमा के भीतर देय दायित्वों का निर्वाहन किए जाने को कहा। साथ ही सभी विभागीय पदाधिकारियों को विभागीय समन्वय बनाकर कार्य करने का निदेश दिया। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने मौके पर सरकार के कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर गति दिए जाने का संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि नामित पदाधिकारी समन्वय के साथ काम करें और जिला के साथ राज्य को तरक्की की राह पर तेजी से दौड़ने में सहयोग दें। एडीएम सुभाष चंद्र मंडल , जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी राम दुलार राम समेत अधिकांश नामित पदाधिकारी विडियो कांफ्रेंस में उपस्थित थे।

हरियाली के दुश्मनों ने हरे पेडों पर चलाया आरा, 27 पेडों की परमीशन पर काटे 32 पेड़

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। जहां एक ओर उ.प्र. सरकार पेड़ लगाओ अभियान में जी जान से जुटी हुई है वही एक ओर हरियाली के दुश्मनो द्वारा साठ-गॉठ करके हरे पेड़ो पर आरा चलाया जा रहा है। मामला राजधानी लखनऊ के कल्ली पश्चिम का है जहॉ पर लगभग 32 आम के पेड़ो पर आरा चलाकर धरासाई कर दिया गया। मजे की बात यह है कि हरे पेड़ो की रखवाली करने वाले वन विभाग ने कुछ पेड़ो की परमीशन भी दी है वही कुछ पेड़ो को बिना परमीशन के काट दिया गया। कल्ली पश्चिम की रहने वाली गीता ने आरोप लगाया कि उनकी भूमि भूमि खसरा संख्या 2072 कल्ली पश्चिम तहसील सरोजनीनगर, जनपद लखनऊ मे है। जो कि प्रार्थिनी की पुस्तैनी भूमि है। जिसका मुकदमा हाईकोर्ट लखनऊ में संजय श्रीवास्तव से चल रहा है। जिसमें दिनांक 18.12.2024 को ओमेक्स गर्वविल्टेक के प्रोपराईटर सईर्दुर रहमान व मनोज तिवारी, ओमेक्स गर्वविल्टेक के कर्मचारीगण-कुलदीप सिंह व महेन्द्र पाल ने रात्रि के समय चोरी से कटवा लिये। वही ओमेक्स गर्वबिल्टेक के मनोज तिवारी ने बताया कि हमने विधिक कार्यवाही करके वन विभाग से परमीशन लेने के बाद पेड़ो को कटवाया है। सरोजनीनगर वन रेंजर एस एन सिंह ने बताया कि 27 पेड़ काटने के लिए वन विभाग ने परमीशन दी थी जिसे पहले एक बार कैंसिल भी कर दिया गया था लेकिन विधिक परामर्श लेने के बाद फिर से परमीशन दी गयी थी। जानकारी मिली है कि 27 पेड़ो को काटने की परमीशन लेने के बाद लगभग 32 पेड काट दिये गये है जिस पर पेड काटने वालो के खिलाफ 35 हजार रूपये का जुर्माना लगाया है।

दीपक लाल श्रीवास्तव अखिल भारतीय कायस्थ महासभा में राष्ट्रीय सचिव पद पर हुए मनोनीत

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। भारतीय एकता युवा मोर्चा के संस्थापक दीपक लाल श्रीवास्तव अखिल भारतीय कायस्थ महासभा में राष्ट्रीय सचिव पद पर मनोनीत किये गये। पूर्व प्रधान आयुक्त एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय कायस्थ महासभा अनूप कुमार श्रीवास्तव द्वारा दीपक लाल श्रीवास्तव को मनोनीत किया गया है। मनोनीत के साथ साथ दीपक लाल श्रीवास्तव को लम्बे समय से जुड़े रहने और संघर्षशील व्यक्ति की बात कही, अनूप श्रीवास्तव के विश्वनीय दीपक लाल श्रीवास्त को बड़ी जिम्मेदारी देते हुए राष्ट्रीय कार्यकारिणी में रखने का फैसला किया साथ ही साथ 12जनवरी को न्यू दिल्ली में एक बड़ा आयोजन किया जा रहा है। उसमें भी अहम भूमिका अदा करने को कहा गया है। कायस्थ एकता ही ताकत है, हक की लड़ाई के लिए एक मत होना जरूरी है एक साथ होना जरूरी है इस मुद्दे पर दीपक लाल श्रीवास्तव ने कहा कि वह वर्षो से समाज सेवक है एवं भाजपा सदस्य है एवं भारतीय एकता युवा मोर्चा के संचालक है, जो संगठन उत्तर प्रदेश के अनेको जिलों में कार्य करती है। 2022 विधान सभा, 2022 उप चुनाव लोकसभा में भाजपा ने पूर्वांचल की जिम्मेदारी दी थी जिसमें काफी सफलता मिली, कई केंद्रीय मंत्री, सांसद, विधायक और पार्टी द्वारा सम्मानित किया गया है। महासभा में जुड़ने के लिए अनूप कुमार श्रीवास्तव का धन्यवाद आभार करते हुए, संगठन द्वारा जो जिम्मेदारी दी गई है उसको निभाने की हर कोशिश करेंगे।

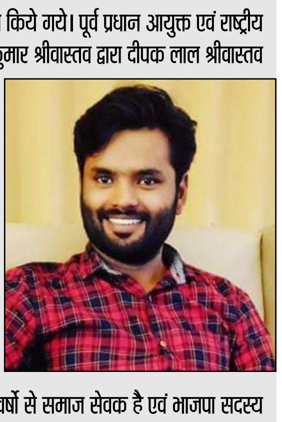

मकसद संस्था, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित उत्तराखण्ड सांस्कृतिक उत्सव एवं कार्यशाला

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। मकसद संस्था, भिकियासैण, अल्मोड़ा उत्तराखण्ड के तत्वाधान में तथा उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, तीज त्योहारों तथा प्रेरणादायी परम्पराओं पर आधारित उत्तराखण्ड सांस्कृतिक उत्सव एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्था की सचिव श्रीमती हेमा बिष्ट ने बताया कि दिनांक 01 दिसम्बर 2024 से 23 दिसम्बर 2024 तक सांस्कृतिक कार्यशाला संगोष्ठी एवं रिहर्सल आयोजित की गयी। तदोपरांत आज दिनांक 24 दिसम्बर 2024 को उत्तराखण्ड सांस्कृतिक उत्सव का भव्य आयोजन राजकीय इण्टर कॉलेज गौजानी, रामनगर में हेमा बिष्ट के निर्देशन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अनिल कुमार सिंह, प्रधानाचार्य महोदय राजकीय इण्टर कालेज गौजानी रामनगर तथा विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र सिंह, पीटीए अध्यक्ष, ममता एसएमसी अध्यक्ष द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वललित किया गया। संस्था के संरक्षक मधन सिंह बिष्ट एवं सचिव श्रीमती हेमा बिष्ट द्वारा मुख्य अतिथि एवं अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कलाकार भूवन जोशी द्वारा किया गया। उत्तराखण्ड सांस्कृतिक उत्सव में सर्वप्रथम मॉ नन्दा सुनन्दा मेरी सेवा ली आ वन्दना से उत्सव का सुभारम्भ किया गया। उत्तराखण्ड में मॉ नन्दा को समर्पित वंदना और स्तुति का विशेष स्थान है। मॉ नन्दा सुनंदा मेरी सेवा ली आ वंदना से उत्सव का शुभारम्भ करना न केवल भक्तिमय वातावरण बनाता है बल्कि उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति और परम्पराओं की गहराई को भी दर्शाता है। मां नन्दा उत्तराखण्ड की देवी हैं, जिन्हें उत्तराखंड की आराध्य देवी के रूप में पूजा जाता है। संस्था के कलाकारों द्वारा पारम्परिक झोड़ा लोकनृत्य प्रस्तुत किया जो सामूहिकता और संस्कृति का प्रतीक है, इस नृत्य ने अपनी मनमोहन प्रस्तुति से सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मकसद संस्था के कलाकारों ने उत्तराखण्ड के पारम्परिक छपेली नृत्य की मनमोहन प्रस्तुति दी जिसके बोल थे बिमला छोरी। इस नृत्य ने अपनी सुन्दर लय और भावपूर्ण अभिव्यक्ति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। छपेली नृत्य उत्तराखण्ड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, जिसमें प्रेम, उल्लास और ग्रामीण अंचलों के जीवन की झलक मिलती है। पारम्परिक वेशभूषा और सुमधुर गीतों के साथ प्रस्तुत इस नृत्य ने उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति का जीवंत चित्रण किया। सुप्रसिद्ध लोक गायक अमित बुधोरी ने अपनी सुरीली आवाज में सुन्दर लोकगीत प्रस्तुत कियें, जो श्रोताओं के दिलों को छू गए। उनकी प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक धरोहर से सराबोर कर दिया और दर्शको से भरपूर सराहना प्राप्त की। गायन एवं वाद्य कलाकार-मुख्य गायक अमित बुधोडी, हेमा बिष्ट, ज्योति उप्रेती, ढोलक पर सौरभ जोशी, हुड़का वादक गौरव जोशी, सह गायक भूवन चन्द्र जोशी, जानकी जोशी, की बोर्ड अमित बुघोडी आदि। नृत्य कलाकार-मनोज कुमार जोशी, कामना बिष्ट, प्रकाश थापा, प्रदीप कुमार, ललिता साह, माही राणा, निकिता, रिया सिंह आदि। उत्सव के समापन में मुख्य अतिथि अनिल कुमार सिंह, प्रधानाचार्य महोदय, राजकीय इण्टर कॉलेज गौजानी, रामनगर ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का विद्यालयों में आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल हमारी युवा पीढी को संस्कृति से जोड़ता है, बल्कि उनके संरक्षण और विकास का भी मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होने कार्यक्रम की सुंदरता और भव्यता की सराहना करते हुए कलाकारों और संस्था को इस अद्वितीय प्रस्तुति के लिए बधाई दी। उन्होने कहा कि ऐसे आयोजन हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में अहम भूमिका निभाते है। इस अवसर पर हेमा बिष्ट ने सभी अतिथियों, शिक्षको, सम्मानित दर्शको छात्र छात्रओं, कलाकारों, प्रिंट मीडिया, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार का हृदय से आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उत्तराखंड के महान विभूति इंद्रमणि बड़ोनी को उनके जन्मदिवस पर याद किया गया।

हीरालाल यादव पब्लिक स्कूल में क्रिसमस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। सरोजनीनगर स्थित हीरालाल यादव पब्लिक स्कूल में मंगलवार को क्रिसमस का पर्व हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाया गया। स्कूल प्रांगण में छात्र-छात्राओं, शिक्षकों/शिक्षिकाओं ने मिलकर इस खास दिन को यादगार बना दिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभु यीशु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना से हुई। इसके बाद छात्रों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। जिनमें क्रिसमस कैरल, नृत्य और नाटक शामिल थे। छात्रों ने प्रभु यीशु के जन्म की कहानी को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। जिसने सभी दर्शकों का मन मोह लिया। सांता क्लॉज ने बच्चों के बीच उपहार बांटे और खुशियां फैलाईं। विद्यालय प्रांगण को रंग-बिरंगी रोशनियों, सितारों और क्रिसमस ट्री से सजाया गया, जो उत्सव की सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। कोआर्डिनेटर यामिनी तिवारी ने अपने संबोधन में क्रिसमस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को दया, प्रेम और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने सभी को त्योहार की शुभकामनाएं दीं और आयोजन को सफल बनाने के लिए छात्रों और शिक्षकों की सराहना की। यह कार्यक्रम न केवल मनोरंजन का माध्यम बना, बल्कि छात्रों को एकजुटता और भाईचारे का संदेश भी दिया। हीरालाल यादव पब्लिक स्कूल में मनाये गए क्रिसमस उत्सव के अवसर पर प्रबन्धक राम सिंह यादव, प्रबन्ध निदेशक इंजी. अनुराग, पूनम श्रीवास्तव, प्रतिभा पाण्डेय, नीतू रस्तोगी आदि उपस्थित रहे।

संपादकीय

मर्ज का फर्ज

सर्वविदित है कि देश की विशाल आबादी पर चिकित्सकों की उपलब्धता वैश्विक मानकों के अनुरूप नहीं है। यूनेस्को कई बार बता चुका है कि भारत के कई स्थानों पर एक हजार व्यक्तियों पर एक चिकित्सक भी उपलब्ध नहीं है। ऐसे में यदि देश के कई मेडिकल कॉलेजों के चिकित्सा पाठ्यक्रमों में सीटें खाली रह जाएं तो इसे देश के लिये विडंबना ही कहा जाएगा। इस ज्वलंत मुद्दे पर देश की शीर्ष अदालत ने संज्ञान लेते हुए निर्देश दिए कि इस माह के अंत तक देश के कई मेडिकल कालेजों के चिकित्सा पाठ्यक्रमों में रिक्त पड़ी सीटों को तुरंत भरा जाए। जाहिर है जब देश में पहले से ही डॉक्टरों के कमी है तो ये सीटें क्यों खराब की जा रही हैं? निश्चित रूप से समाज के अंतिम व्यक्ति को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में शीर्ष अदालत की यह पहल बदलावकारी साबित हो सकती है। देश में चिकित्सकों की कमी को देखते हुए पिछले दिनों बड़ी संख्या में नये मेडिकल कालेज खोले गए हैं, लेकिन इनमें सीटों की संख्या दुगनी हो जाने के बाद भी डॉक्टरों की कमी बनी हुई है। वैसे निजी अस्पतालों में तो डॉक्टरों की कमी नहीं है, लेकिन सार्वजनिक अस्पतालों व डिस्पेंसरियों में डॉक्टरों की कमी बरावर बनी रहती है। खासकर ग्रामीण इलाकों में तो स्थिति बहुत खराब है। यही वजह है कि देश के बड़े चिकित्सा संस्थानों मसलन एम्स व पीजीआईएमईआर जैसे संस्थान मरीजों के दबाव से चरमरा रहे हैं। साथ ही चिकित्सक बेहद दबाव में काम कर रहे हैं। यह सुखद ही है कि देश की शीर्ष अदालत ने इस संकट की गंभीरता को महसूस करते हुए निर्देश दिए हैं कि इस महीने के अंत तक काउंसलिंग करा कर उन सीटों को तुरंत भरा जाए। निश्चित रूप से इस पहल से देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को संबल मिल सकेगा। निस्संदेह, यह तार्किक है कि चिकित्सा पाठ्यक्रम में दाखिले को लेकर देश में भारी मारामारी है। इसकी वजह यह है कि मेडिकल की पढ़ाई के बाद कमोबेश रोजगार पाना गारंटी जैसी होता है। उनके लिये विदेशों में भो रोजगार के आकर्षक अवसर होते हैं। अन्यथा निजी अस्पताल खोलकर भी वे अपना शानदार करिअर बना सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ा सवाल हमारे गांवों में चिकित्सा सुविधाओं के नितांत अभाव का होना है। ऐसा नहीं है कि इस चुनौतीपूर्ण स्थिति का सरकार को भान नहीं है। सरकार भी मानती है कि देश के ग्रामीण इलाकों के अस्पतालों अथवा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता तो दूर सामान्य डॉक्टरों की मौजूदगी भी कम ही है। इस संकट का समाधान तभी संभव है जब देश में अधिक मेडिकल कालेज खुलें और उनकी सभी सीटों को भरा जाए। वहीं दूसरी ओर डॉक्टरों को ग्रामीण इलाकों में काम करने के लिये प्रेरित किया जाए। उन्हें वेतन तथा प्रोन्नति के विशेष अवसर दिए जाएं। अनिवार्य रूप से तय किया जाए कि मेडिकल कालेजों से निकलने वाले चिकित्सक कुछ प्रारंभिक वर्षों तक ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दें। इस बात पर मंथन किया जाना चाहिए कि विगत में हुए ऐसे प्रयास क्यों सिरे नहीं चढ़ पाए। इसके अलावा दुनिया के अनेक देशों से मेडिकल की पढ़ाई करके आने वाले डॉक्टरों को आवश्यक अर्हताएं पूरी करने पर डॉक्टरी करने की सुविधा प्रदान की जाए। किसी भी लोक कल्याणकारी सरकार का दायित्व बनता है कि गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले तथा कमजोर वर्गों के लोगों को सस्ती चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाएं। ये लोग महंगे निजी अस्पतालों की चौखट तक पहुंचने की क्षमता नहीं रखते। सरकार ने आयुष्मान योजना जैसी कई पहल तो की हैं, लेकिन ध्यान रखना जरूरी है कि इन योजनाओं के क्रियान्वयन में व्यवस्थागत दिक्कतें पैदा न हों। सरकारों का नैतिक दायित्व बनता है कि हाशिये के समाज को सस्ती व सहज रूप से चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें। उन्हें विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता का भी लाभ मिल सके। साथ ही नीति-नियंताओं के लिये यह आत्ममंथन का विषय है कि देश चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नई खोजों व अनुसंधान में पीछे क्यों रह गया है। साथ ही देश की परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहन भी जरूरी है।

व्यक्तिगत जानकारी उजागर करते पैन और आधार कार्ड

हिंदुस्तान की आबादी की 141करोड़ जनसंख्या में से 120 करोड़ जनमानस के पास आधार कार्ड है और पैन कार्ड धारकों की भी संख्या अब करोड़ों में पहुंच चुकी है। ये आंकड़े सरकार के पास भी हैं जो अक्सर यह संदेह पैदा कतें है कि इसका कही दुरुपयोग होकर कहीं आपके निजी जीवन में हस्तक्षेप तो नहीं किया जा रहा है। सरकार द्वारा समस्त शासकीय सुविधाओं की प्राप्ति के लिए आधार कार्ड, पैन कार्ड एवं मोबाइल सिम के लिए आधार कार्ड की अनिवार्यता लागू कर दी गई है। यह बात तो सर्वविदित है कि मोबाइल में सिम कार्ड लेते वक्त आधार कार्ड की अनिवार्यता राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अति महत्वपूर्ण तो है ही पर इसमें कभी-कभी यह आशंका भी होने लगती है कि भारत में निवास करने के लिए आधार के रूप में निजी जीवन में कहीं दखलअंदाजी तो नहीं है अथवा व्यक्ति के जीवन में उसकी निजता पर प्रहार तो नहीं है। चूंकि आधार कार्ड व्यक्ति की निजी पहचान को अपने में सम्मिलित करता है और इसकी अनिवार्यता से व्यक्ति की निजी पहचान का दुरुपयोग हो सकता है। व्यक्ति कहां क्या गतिविधियां कर रहा है यह आधार की अनिवार्यता के साथ सरकार के पास सारी जानकारी उपलब्ध हो जाती है, जिससे सरकार द्वारा अथवा डाटा संग्रहण केंद्र के माध्यम से किसी भी हैकर द्वारा दुरुपयोग किया जा सकता है ।जो व्यक्तिगत इच्छा के विपरीत है और यदि सरकार आधार से संबंधित आंकड़े किसी अन्य पक्ष के साथ साझा करती है तो इसके दुरुपयोग की संभावना प्रबल हो जाती है। आधार कार्ड के दुरुपयोग की दूसरी समस्या इसके राजनीतिक प्रतिशोध के रूप में उपयोग किए जाने की हो सकती है। राजनीति में सत्ता पक्ष की जितनी भूमिका होती है विपक्ष की भूमिका उससे अधिक होती है। आधार कार्ड के आंकड़ों के माध्यम से कोई भी सत्ता पक्ष, विपक्ष की इस भूमिका को सीमित करने का प्रयास कर सकता है। आधार कार्ड की अनिवार्यता के साथ विपक्षी राजनेताओं के संवादों को टेप कर रणनीति का पूर्वानुमान लगाना सत्ता पक्ष की मंशा हो सकती है,इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। पर इसके कई फायदे भी हैं ,आधार कार्ड की पैन कार्ड में अनिवार्यता ने वर्षों से टैक्स की छूट ले रहे फर्जी पैन कार्ड धारकों के हितों में चोट तो की है। इससे सरकार के कर संग्रहण में बढ़ोतरी होने से योजनाओं के लिए धन आवंटन एवं भौतिक सामाजिक निवेश में वृद्धि होगी। आधार कार्ड की अनिवार्यता से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता नहीं बढ़ाया जा सकता है क्योंकि इससे सरकार के पास वास्तविक सफलता के आंकड़े भी उपलब्ध होंगे जो बेहतर नीति निर्माण के लिए सहायक भी होगी। विगत दिनों सुप्रीम कोर्ट ने भी माना कि भले ही निजता का अधिकार मौलिक अधिकार हो किंतु सरकार द्वारा जनकल्याण के कार्यों के लिए उसका अतिक्रमण किया जा सकता है। एक लोकतांत्रिक सरकार का प्रथम एवं अंतिम उद्देश्य लोक कल्याणकारी रूप में स्वयं को स्थापित करना है। यदि लोक कल्याण के लिए सरकार व्यक्तियों के आंकड़ों का संग्रहण करती है उसे उचित माना जाना चाहिए। शर्त यह है कि सरकार विधि सम्मत स्थापित कर दें कि उन एकत्रित आंकड़ों का दुरुपयोग कि किन्ही भी स्थिति में नहीं किया जाएगा। व्यक्ति की निजता एक अखंडनिय अधिकार है, किंतु इसकी निरंतरता के लिए सरकार का सहयोग अपनी कर्तव्यनिष्ठा का पालन भी आवश्यक है। व्यक्ति को चाहिए कि वर्तमान डिजिटल युग के खतरों को भांपते हुए निजी पहचान को किसी भी अनाधिकृत वेबसाइट अथवा व्यक्ति को देने से बचें क्योंकि निजता का वास्तविक खतरा उससे है,ना कि सरकार के आंकड़ों के संग्रहण से है।

डॉलर को बढ़ावा देने के आक्रामक रुख से रुपया अस्थिर स्थिति में

के रवींद्रन

> "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मित्र, अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड जे ट्रंप एक बार फिर व्हाइट हाउस में जाने वाले हैं, लेकिन यह भारत के लिए विशेष रूप से फायदेमंद नहीं है"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मित्र, अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड जे ट्रंप एक बार फिर व्हाइट हाउस में जाने वाले हैं, लेकिन यह भारत के लिए विशेष रूप से फायदेमंद नहीं है। जो भी हो, ट्रंप को मोदी समर्थक रहते हुए भी भारत विरोधी कहा जा सकता है। मोदी-ट्रम्प के बीच यह सौहार्द राष्ट्रपति-चुनाव के भारत विरोधी आर्थिक रुख के बिल्कुल विपरीत है, जो पहले से ही जवाबी टैरिफ की धमकियों और वैश्विक मुद्रा के रूप में अमेरिकी डॉलर के दृढ़ बचाव में प्रकट हुआ है। ट्रंप का यह दावा कुछ अमेरिकी उत्पादों पर नई दिल्ली के उच्च टैरिफ के प्रति उनके असंतोष से उपजा है। यह अमेरिकी आर्थिक हितों को प्राथमिकता देने की उनकी व्यापक नीति को दर्शाता है, जो अक्सर दीर्घकालिक व्यापार साझेदारी की कीमत पर होगी। भारत के लिए, जो अपने व्यापार संतुलन को बनाये रखने के लिए निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है, ऐसे खतरे संभावित व्यवधानों का संकेत देते हैं। अमेरिका के साथ तनावपूर्ण व्यापार संबंध मौजूदा आर्थिक चुनौतियों को और बढ़ा सकते हैं, खासकर तब जब भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी से जूझ रही हो। भारत के लिए चिंता का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र मजबूत अमेरिकी डॉलर के लिए ट्रम्प का अटूट समर्थन है। वैश्विक मुद्रा के रूप में डॉलर की स्थिति की रक्षा करने पर उनके प्रशासन का जोर वैश्विक वित्तीय प्रणाली में अमेरिकी प्रभुत्व को सुरक्षित करने की व्यापक रणनीति को रेखांकित करता है। अपने चुनाव के कुछ दिनों के भीतर ट्रम्प ने भारत सहित ब्रिक्स देशों को ऐसे कदमों के खिलाफ चेतावनी जारी की, जो अमेरिकी डॉलर के वर्चस्व को खतरे में डाल सकते हैं। भारत ने कूटनीतिक रूप से इन चेतावनियों को कम करके आंकते हुए, डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए कुछ देशों के साथ रुपया-आधारित द्विपक्षीय व्यापार में भाग लिया है। हालांकि, ऐसी पहल अपनी प्रारंभिक अवस्था में है और डॉलर-केंद्रित वैश्विक व्यापार नीतियों के व्यापक प्रभाव को कम नहीं कर सकती हैं।ट्रम्प के राष्ट्रपति पद के दौरान अमेरिकी डॉलर की मजबूती ने पहले ही रुपये को गहरा झटका दिया है, जो डॉलर के मुकाबले ऐतिहासिक निचले स्तर पर पहुंच गया है। इस गिरावट के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं, जिसमें मजबूत अमेरिकी आर्थिक डेटा भी शामिल है, जो ब्याज दरों पर फेडरल रिजर्व के आक्रामक रुख को पुष्ट करता है। उच्च अमेरिकी टैरिफ दरें भारत जैसे उभरते बाजारों से पूंजी प्रवाह को आकर्षित करती हैं, जिससे रुपये का अवमूल्यन बढ़ जाता है। कमजोर रुपया आयात की लागत, विशेष रूप से कच्चे तेल की लागत को बढ़ाता है, जिससे व्यापार घाटा बढ़ता है और घरेलू मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलता है। मुद्रा को स्थिर करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप को सीमित सफलता मिली है। रुपये को स्थिर करने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार पर अत्यधिक निर्भरता भारत के भंडार को कम कर सकती है, जिससे अर्थव्यवस्था बाहरी झटकों के प्रति संवेदनशील हो सकती है। घरेलू स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रही है जो रुपये की गिरावट में योगदान करती हैं।

औद्योगिक उत्पादन में कमी, उपभोक्ता मांग में गिरावट और कमजोर निवेश भावना की विशेषता वाली आर्थिक मंदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था में विश्वास को खत्म कर दिया है। धीमी आर्थिक वृद्धि विदेशी निवेशकों के लिए रुपये के आकर्षण को कम करती है, जो अनिशिचतता के दौर में उभरते बाजारों को अधिक जोखिम वाला मानते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत का चालू खाता घाटा, जो तब उत्पन्न होता है जब देश निर्यात से अधिक आयात करता है, लगातार बढ़ रहा है और रुपये पर निरंतर दबाव डाल रहा है। वैश्विक तेल की कीमतों में सुधार और भारत के प्रमुख तेल आयातक होने के कारण, इन आयातों के भुगतान के लिए डॉलर की मांग बढ़ गयी है, जिससे रुपये की परेशानी और बढ़ गयी है।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारक मुद्रास्फीति का बढ़ता दबाव है। मुद्रास्फीति मुद्रा की क्रय शक्ति को कम करती है और निवेशकों के विश्वास को कम करती है। इसके अतिरिक्त, रुपये की गिरावट भारतीय अर्थव्यवस्था के भीतर संरचनात्मक मुद्दों से प्रभावित है। औद्योगिक उत्पादन और उपभोक्ता खर्च जैसे प्रमुख संकेतकों ने कमजोर होने के संकेत दिखाये हैं।

संविधान के 75 सालः हम कहां हैं

राम पुनियानी

भारत की संसद ने दो दिन तक देश के संविधान पर चर्चा की। विपक्षी नेताओं ने कहा कि हमारे संविधान में समाज के कमजोर वर्गों और धार्मिक अल्पसंख्यकों की भलाई के लिए अनेक प्रावधान हैं मगर उसके बावजूद ये वर्ग परेशानहाल हैं। मुसलमानों को दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया गया है। इसके विपरीत, सत्ताधारी भाजपा के नेताओं ने संसद के अन्दर और संसद के बाहर भी कहा कि संवैधानिक मूल्यों पर हमले नेहरु (नफरत फैलाने वाले भाषण पर रोक लगाने के लिए संवैधानिक संशोधन) ने शुरू किये और यह सिलसिला इंदिरा गांधी (आपातकाल) से होता हुआ राजीव गांधी (शाहबानो) और राहुल गांधी (विधेयक को फाड़ना) तक चला। उन्होंने कहा कि सभी सामाजिक बुराईयों की जड़ में नेहरु-गांधी परिवार है और उसी ने संविधान को नुकसान पहुंचाया है ।भाजपा नेता और हिन्दू राष्ट्रवादी चिन्तक लम्बे समय से कहते आए हैं कि भारत का संविधान पश्चिमी मूल्यों पर आधारित है, उसे औपनिवेशिक ताकतों ने हमारे समाज पर लादा है और वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति से मेल नहीं खाता। उनका यह तर्क भी रहा है कि कांग्रेस पार्टी ने मुसलमानों का तुष्टिकरण करने और उनका वोट बैंक बनाने के लिए संविधान का दुरुपयोग किया ।जैसा कि हम सब जानते हैं, संविधान उन मूल्यों का प्रतिनिधि है जो स्वाधीनता संग्राम के दौरान उपजे. संविधान तैयार करते समय हमारी सभ्यता की लम्बी परंपरा का भी ख्याल रखा गया। जिन लोगों ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया और जो उसकी पीछे की विचारधारा में आस्था रखते थे, भारतीय सभ्यता की उनकी समझ, उन लोगों से बहुत भिन्न थी जो औपनिवेशिकता-विरोधी आन्दोलन से दूर बने रहे और ब्रिटिश शासकों के आगे नतमस्तक रहे। जहां आजादी का आन्दोलन भारत को समृद्ध विविधताओं वाला एक बहुवादी देश मानता था वहीं स्वाधीनता आन्दोलन से दूर रहने वाले उसे हिन्दू सभ्यता मानते थे। ऐसे लोगों को बहुवाद पसंद नहीं है और वे मानते हैं कि बहुवाद को शिक्षित, आधुनिक नेताओं ने देश पर थोपा है। संघ परिवार यह भूल जाता है कि भारतीय सभ्यता को हिन्दू सभ्यता बताना, हमारी सभ्यता में जैन, बौद्ध, ईसाई और सिक्ख धर्मों व इस्लाम के योगदान को नकारना है। हिन्दू राष्ट्रवादियों के सबसे प्रिय भगवान राम को देखने के भी अलग-अलग तरीके हैं। कबीर के लिए राम सर्वव्यापी निर्गुण हैं तो गांधी के लिए राम सभी धर्मों के लोगों के रक्षक हैं। गांधी कहते थे श्ईश्वर अल्लाह तेरो नामश। जवाहरलाल नेहरु ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक श्भारत एक खोजश् में लिखा है कि श्भारत एक प्राचीन स्लेट है, जिस पर कई परतों में अलग-अलग कालों में विचार और भावनाएं दर्ज की गईं मगर कोई नयी परत, पिछली परतों को न तो पूरी तरह ढंक सकी और न मिटा सकीश। नेहरु बड़े गर्व से सम्राट अशोक के शासनकाल को याद करते हैं, जिन्होंने अपने कई शिलालेखों में वैदिक हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीविकों के साथ एक-समान व्यवहार करने की बात कही है। संघ परिवार और उसके चिंतक जहां भारत को विशुद्ध ब्राह्मणवादी हिन्दू देश मानते हैं वहीं गांधी, नेहरु इत्यादि इसे सभी भारतीयों का देश मानते थे। भारत की संविधान सभा मोटे तौर पर उस धारा का प्रतिनिधित्व करती थी, जो राष्ट्रीय धारा थी, जो वह धारा थी जिसने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया था। इसके विपरीत, भारत को ब्राह्मणवादी हिन्दू राष्ट्र मानने वाला आरएसएस हाशिये की धारा थी। दोनों धाराओं का यह अंतर, भारत के संविधान का मसविदा तैयार होने के समय से ही परिलक्षित होने लगा था। अम्बेडकर और नेहरु का यह स्पष्ट मत था कि देश की सरकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि संविधान के मूल ढांचे से कोई छेड़छाड़ न की जाए और उसे पूरी तरह से लागू किया जाए। मगर 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संविधान के समीक्षा के लिए वेंकटचलैया आयोग का गठन किया। उस समय राष्ट्रपति डॉ के.आर. नारायणन ने बहुत सामयिक टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि, श्संविधान के कारण हम नाकाम नहीं हुए हैं, बल्कि हमने संविधान को नाकाम किया हैश। यह बात मोदी सरकार के कार्यकाल के सन्दर्भ में एकदम सही है। इस दौर में संविधान में कोई बदलाव नहीं किये गए मगर संघ परिवार के कई सदस्यों ने ऐसा करने की इच्छा और जरुरत बताई और उन्हें शीर्ष नेतृत्व द्वारा फटकारा नहीं गया। श्अब की बार चार सौ पारश् का नारा इसी इच्छा का प्रतीक था। भाजपा चाहती थी कि उसे लोकसभा में 400 से ज्यादा सीटें हासिल हों ताकि वह संविधान को बदल सके। देश में नफरत फैलाने वाले भाषण देने और बातें कहने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। इसका सबसे ताजा उदाहरण हैं इलाहबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शेखर कुमार यादव, जिन्होंने विश्व हिन्दू परिषद् के एक कार्यक्रम में कहा कि श्भारत बहुसंख्यकों की मर्जी के अनुसार चलेगा। जस्टिस यादव ने समान नागरिक संहिता एक संवैधानिक आवश्यकता विषय पर बोलते हुआ कहा, श्केवल वही स्वीकार किया जाएगा जो बहुसंख्यकों की भलाई और प्रसन्नता के लिए फायदेमंद हो। इससे भी ज्यादा बुरी बात यह है कि उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यादव के कथन का समर्थन किया। यह अच्छा है कि सुप्रीम कोर्ट ने यादव के सांप्रदायिक और नफरत फैलाने वाले भाषण का संज्ञान लिया है. मगर आदित्यनाथ के यादव को समर्थन का कौन संज्ञान लेगा? वर्तमान स्थितियों पर एक सटीक टिप्पणी में जस्टिस अस्पि चिनॉय ने कहा, श्भाजपा केंद्र में सरकार में है और उसके पास संसद में पूर्ण बहुमत है। मगर उसे भारत और उसके संविधान के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को कानूनी तौर पर बदलने की कोई जरुरत महसूस नहीं हो रही है। राज्य और उसके विविध तंत्र उसके नियंत्रण में है और वह कानूनी तौर पर भारत के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को बदले बिना ही उसके धर्मनिरपेक्ष संविधान को कमजोर करने और हिंदुत्व पर आधारित राजकाज कायम करने में कामयाब रही है। भाजपा के पूर्ववर्ती जनसंघ के सांप्रदायिक चरित्र का खुलासा उस समय ही हो गया था जब संविधान का मसविदा जारी किया गया था।

इसके कुछ दिन बाद, आरएसएस के गैर-आधिकारिक मुखपत्र आर्गेनाइजर ने 30 नवम्बर 1949 के अपने अंक में लिखा था, श्भारत के नए संविधान के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि उसमें कुछ भी भारतीय नहीं है...भारत के प्राचीन संवैधानिक कानूनों, नामकरणों और भाषा का इसमें नामोनिशां तक नहीं है।

मेष:- नीरस स्वभाववश रचनात्मक योजनाओं को सार्थक करने में असमर्थ होंगे। सब कुछ सामान्य होते हुए भी मन अरुचि का शिकार होगा। समस्याओं के समाधान से उत्साह में वृद्धि होगी।

बृषभ:- किसी कार्य में सफलता से उत्साह में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। परिश्रम से आर्थिक लाभ मिलेगा।

मिथुन:- प्रतिभाओं के बावजूद हीनभाव प्रतिभाओं के लाभ से वंचित करेगा। कल्पनाओं में जीना छोड़ भौतिक जगत के अनुकूल चलने का प्रयत्न करें। सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी।

कर्क:- काफी दिनों से अवरोधित कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने के आसार बनेंगे। काफी दिनों से प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। शिक्षा की दिशा में किया गया प्रयत्न सार्थक होगा।

सिंह:- अच्छे कायरें से परिजनो के दिल में जगह बनायें। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। महत्वपूर्ण कायरें में लापरवाही न करें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कन्या:- कर्जदारों से मन परेशान होगा। नये क्षेत्रों में प्रयास से लाभ संभव। व्यावसायिक यात्रा द्वारा लाभ होगा। नये संबंधों के सहयोग से आर्थिक कठिनाइयां दूर होंगी। प्रणय संबंध के प्रति प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

तुला:- भावुकता व्यावहारिक जगत के अनुकूल चलने में बाधक होगी। अतः व्यावहारिक बने। भविष्य संबंधी कुछ चिंतायें मन पर प्रभावी होंगी। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न बरतें। कल्पनाओं में जीना छोड़े।

वृश्चिक:- किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। सकारात्मक सोच अपनाते हुए जीवन को सही दिशा की ओर केंद्रित करें। परिजनो के अनुकूल चलने की चेष्ठा करें।

धनु:- संवेदनील शरीर ग्रहों की प्रतिकूलता से बीमार पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव।

मकर:- नयी घरेलू जिम्मेदारियों के पैदा होने से व्यय संभव। प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। नये कायरें के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। घर में खुशहाल वातावरण रहेगा।

कुंभ:- कुछ व्यासायिक कारणों से घर से दूर रहना पड़ सकता है। परिजनों की सुख-सुविधा के प्रति मन चिंतित होगा। मस्त-मौला मन ब्यर्थ के कायरे में समय जाया कर महत्वपूर्ण कायरे के प्रति लापरवाह होगा।

मीन:- थोड़ा संयमी व धैर्यवान बने। भाग्य से प्राप्त अच्छी-बुरी सभी स्थितियों के मध्य समझौतावादी रवैया आपनायें। कुछ नई व्यस्तताएं सामने आएंगी। महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति हेतु प्रयत्न तीव्र होगा।

संशोधन से चुनावी प्रक्रिया अधिक शंकास्पद

केंद्र को अब पारदर्शी चुनावी फंडिंग प्रणाली पर काम करना चाहिएसर्वोच्च न्यायालय को बधाई चुनावी बांड रद्द करने के आदेश से लोकतंत्र मजबूत हुआ संविधान निर्माता डॉ. बीआर अंबेडकर के खिलाफगृह मंत्री अमित शाह द्वारा दिये गये अपमानजनक वक्तव्य को लेकर जब संसद के दोनों सदनों में हंगामा मचा हुआ था, उसका फायदा उठाकर सरकार ने चुनावी प्रक्रिया सम्बन्धी इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों के निरीक्षण अथवा सार्वजनिक करने को प्रतिबन्धित कर दिया। अब फुटेज, रिकॉर्डिंग आदि नहीं मांगे जा सकेंगे। यह संशोधन शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन में किया गया जिसका समापन 20 दिसम्बर को हुआ। ईवीएम पर पहले से अविश्वास जतलाया जा रहा है, अब चुनावी प्रक्रिया को यह संशोधन और भी शंकास्पद बनाता है। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल इस पर ऐतराज दिखा रहे हैं, जो वाजिब है। गौरतलब है कि हरियाणा चुनाव में गड़बड़ी की आशंका पर वरिष्ठ अधिवक्ता महमूद प्राचा ने अक्टूबर 2024 को पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी, जिस पर 9 दिसंबर को अदालत ने चुनाव आयोग को हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान एक पोलिंग बूथ के वीडियोग्राफी, सीसीटीवी फुटेज और वोटों से जुड़े कागजात की प्रति श्री प्राचा को देने का आदेश दिया था। इसके लिए छह सप्ताह का वक्त दिया गया था। लेकिन चुनाव आयोग ने नियम में संशोधन की सिफारिश सरकार से की और कानून मंत्रालय ने 20 दिसम्बर को चुनाव नियमों में यह बदलाव किया है। हड़बड़ी में किए गए इस बदलाव से शंका उपजती है कि किसी गड़बड़ी को छिपाने के लिए संशोधन किए गए हैं। बदले नियम के तहत सीसीटीवी कैमरा और वेबकास्टिंग फुटेज के साथ-साथ प्रत्याशियों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों का भी सार्वजनिक निरीक्षण नहीं किया जा सकेगा। सरकार ने यह बदलाव केन्द्रीय चुनाव आयोग की सिफारिश के आधार पर किया है और इसका उद्देश्य इन दस्तावेजों या फुटेज के दुरुपयोग को रोकना बतलाया है। चुनाव संचालन नियम, 1961 के नियम 93 (2)(ए) में यह संशोधन किया गया है। पहले नियम 93 हर किसी को सभी चुनावी दस्तावेजों के सार्वजनिक निरीक्षण तथा उनकी सभी के लिये उपलब्धता का अधिकार देता था। चुनाव आयोग के सूत्रों के अनुसार यह संशोधन गोपनीयता के उल्लंघन को रोकने तथा इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों (रिकॉर्डिंग, फुटेज आदि) के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा दुरुपयोग को रोकने हेतु जरूरी है। इसकी जरूरत इसलिये भी बतलाई गयी कि इन दस्तावेजों, खासकर इलेक्ट्रॉनिक फुटेज का लाभ आतंकवाद से प्रभावित जम्मू-कश्मीर अथवा माओवाद से पीड़ित संवेदनशील क्षेत्रों में सक्रिय तत्व उठा सकते हैं। आयोग के मुताबिक पिछले चुनावों से सम्बन्धित कई दस्तावेज उपलब्ध कराने हेतु निवेदन आये थे। अब ऐसे दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराये जायेंगे जिनका नियमों से सम्बन्ध या सन्दर्भ नहीं है। कहने को तो निर्वाचन आयोग ने यह सिफारिश उनका दुरुपयोग रोकने के लिये की है परन्तु सर्वज्ञात है कि मौजूदा चुनाव आयोग के सारे काम-काज और नियम-कायदे पूरी तरह से सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में किये जाते हैं। इसलिये यह कदम भी गहरे संदेह के घेरे में आ गया है। आयोग की विश्वसनीयता पहले ही इतनी गिर चुकी है कि इसे भाजपा की जेब में रखा माना जाता है। उसका आचरण पिछले कुछ वर्षों से अत्यंत पक्षपाती और मनमाना रहा है। अनेक ऐसे मुद्दे रहे हैं जिनमें निर्वाचन आयोग के सारे फैसले भाजपा के पक्ष हुए हैं। आरोप लगते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सत्ता में बने रहने के लिये आयोग को पूरी तरह से अपने नियंत्रण में ले रखा है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार पर भी उंगलियां उठती हैं कि उन की भूमिका और मंशा सिर्फभाजपा को लाभ देने की रहती है। इस संवैधानिक संस्था की ताकत व महत्व को समझकर मोदी सरकार ने एक संशोधन यह किया कि मुख्य आयुक्त का चयन करने वाले पैनल से सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को हटा दिया। अब इसमें केवल प्रधानमंत्री, एक केन्द्रीय मंत्री तथा विपक्ष के नेता हैं। स्वाभाविक है कि सरकार की मर्जी का ही व्यक्ति इस पद पर बैठ सकेगा। फिर, दो अन्य आयुक्तों को भी पूर्णतरू शक्तिविहीन कर दिया गया है। वे नाममात्र के सदस्य बनकर रह गये हैं। मुख्य आयुक्त का फैसला ही अंतिम होगा। चुनावी प्रक्रिया को अपारदर्शी और पक्षपाती बनाने के एक नहीं सैकड़ों उदाहरण हाल के वर्षों में देखे गये। विधानसभाओं के चुनाव हों या लोकसभा के, चुनाव आयोग का काम केवल विरोधी दलों के खिलाफमामले बनाना तथा भाजपा व उसके सहयोगी गठबन्धनों को क्लीन चिट देना रह गया है। मोदी, शाह से लेकर भाजपा के अनेक नेतागण जमकर व खुल्लमखुल्ला हेट स्पीच करते हैं परन्तु उनके खिलाफ कभी सख्त कार्रवाई नहीं होती। इसके विपरीत विपक्षी दलों के लोगों को नोटिस भेजने से लेकर उनके प्रचार पर बन्दी लाने में आयोग देर नहीं करता। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का मसला लम्बे समय से चर्चा में है। ईवीएम मशीनों में हेराफेरी के आरोप लगते रहे हैं परन्तु आयोग सुनने को तैयार नहीं है। संदेह है कि उसे हैक किया जा सकता है और हाल के वर्षों में चुनावों के अनेक नतीजे उसके जरिये भाजपा के पक्ष में बदले गये हैं। दावा तो यह भी है कि इसी लोकसभा चुनाव में ईवीएम की गड़बड़ी के जरिये भाजपा को बहुमत मिल सका है। कई दलों, संगठनों एवं व्यक्तियों का दावा है कि यह मशीन हैक हो सकती है परन्तु आयोग इस तर्क पर अड़ा रहता है कि ऐसा सम्भव नहीं है। यह नया संशोधन निर्वाचन आयोग एवं चुनावी प्रक्रिया को और भी अपारदर्शी, संदेहास्पद तथा जनविरोधी बनायेगा।

पुलिस चौकी पर बम फेंकने वाले 'खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स' के तीन सदस्य मुठभेड़ में ढेर

बरेली। उत्तर प्रदेश के पीलीभीत में जिला पुलिस तथा पंजाब पुलिस की संयुक्त टीम के साथ सोमवार तड़के हुई मुठभेड़ में गुरदासपुर (पंजाब) में पुलिस चौकी पर बम फेंकने वाले तीन अपराधी मारे गए। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि अपराधियों के कब्जे से दो एके-47 राइफल तथा दो ग्लॉक पिस्तौल बरामद की गई हैं। पंजाब के पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने इसे पाकिस्तान प्रायोजित 'खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स' मॉड्यूल के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी करार दिया। अपराधियों की पहचान गुरदासपुर के निवासी गुरविंदर (25), वीरेंदर सिंह (23) और जसन प्रीत सिंह उर्फ प्रताप सिंह (18) रूप में हुई है। मुठभेड़ उत्तर प्रदेश के पीलीभीत के पूरनपुर पुलिस थाना क्षेत्र में हुई। इससे पहले अपर पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) अमिताभ यश ने पीलीभीत पुलिस के हवाले से बताया था कि पंजाब के गुरदासपुर में ग्रेनेड/बम फेंकने की घटना को अंजाम देने वाले तीन अपराधियों के साथ जिला पुलिस तथा पंजाब पुलिस की संयुक्त टीम की थाना पूरनपुर (पीलीभीत) क्षेत्र में मुठभेड़ हो गई और इस दौरान पुलिस की गोली लगने से तीनों अपराधी गंभीर रूप से घायल हो गए। यश ने बताया कि घायल अपराधियों को पूरनपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया है और अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने बताया कि अपराधियों की पहचान गुरदासपुर के निवासी गुरविंदर (25), वीरेंदर सिंह (23) और जसन प्रीत सिंह उर्फ प्रताप सिंह (18) रूप में हुई है।

बोलेअमिताभ यश... अपर पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) अमिताभ यश ने पीलीभीत पुलिस के हवाले से बताया कि पंजाब के गुरदासपुर में पुलिस चौकी पर बम फेंकने की घटना को अंजाम देने वाले तीन अपराधियों के साथ जिला पुलिस तथा पंजाब पुलिस की संयुक्त टीम की थाना पूरनपुर (पीलीभीत) क्षेत्र में मुठभेड़ हो गई और इस दौरान पुलिस की गोली लगने से तीनों अपराधी गंभीर रूप से घायल हो गए। यश ने बताया कि अपराधियों को पूरनपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया है। उन्होंने बताया कि पीलीभीत पुलिस ने तीनों अपराधियों की मौत की पुष्टि की है और अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है। अपर पुलिस महानिदेशक ने बताया कि अपराधियों की पहचान गुरदासपुर के निवासी गुरविंदर (25), वीरेंदर सिंह (23) और जसन प्रीत सिंह उर्फ प्रताप सिंह (18) रूप में हुई है।

ताबड़तोड़ फायरिंग में दो सिपाही भी घायल

पंजाब के वांटेड खालिस्तानी आतंकियों के पीलीभीत के पूरनपुर इलाके में छिपे होने की सूचना पर पुलिस अलर्ट हो चुकी थी। चेकपोस्ट पर अलर्ट था। इसी बीच पूरनपुर माधोटांडा मार्ग पर बाइक सवार तीन संदिग्ध होने की जानकारी मिली। इस पर जब टीम पहुंची तो पुलिस पर ताबड़तोड़ फायरिंग की गई। दो गोली पूरनपुर पुलिस की सरकारी गाड़ी पर भी लगी है। पीलीभीत पुलिस के माधोटांडा थाने में तैनात सिपाही सुमित और शाहनवाज भी घायल हुए हैं। उनको अस्पताल भर्ती कराया गया है। उनकी हालत खतरे से बाहर है।

तीनों पूरनपुर से चोरी हुई बाइक पर थे सवार

मुठभेड़ में मारे गए तीनों आतंकी बाइक पर सवार थे। पुलिस ने बाइक को लेकर पड़ताल की तो सामने आया कि यह बाइक पूरनपुर से एक दिन पहले चोरी की गई थी।

चल रही पड़ताल..पीलीभीत में तो नहीं पनाहगार

एसपी अविनाश पांडेय ने तीनों आतंकियों के मुठभेड़ में मारे जाने की पुष्टि की।अब पुलिस यह भी पड़ताल कर रही है कि आखिर पीलीभीत में इनका कोई पनाहगार तो नहीं। बाइक एक दिन पूर्व चोरी की थी। ऐसे में वह कहां रुके और किसके संपर्क में थे। इसे लेकर पुलिस पड़ताल कर रही।आखिर ये आतंकी पीलीभीत आए थे तो कहीं इनका नेटवर्क तो यहां नहीं है। पड़ताल को टीम लगाई है। एसपी का कहना है कि मोबाइल भी टीम को मिले हैं, इनसे भी अन्य क्लू जुटाए जाएंगे।

धनबाद सांसद पर लगे आरोप निराधार: बेंगू ठाकुर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। बंगला भाषा उन्नयन समिति के प्रदेश अध्यक्ष रणजीत मुखर्जी उर्फ बेंगू ठाकुर ने मंगलवार को धनबाद प्रेस क्लब में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया। जिसमें उन्होंने माले विधायक अरूप चटर्जी के समर्थक सम्राट चौधरी द्वारा सोमवार को प्रेस वार्ता में इस्तेमाल किये गए बैनर पर आपत्ति जताई और सम्राट चौधरी पर कार्यवाई की बात कही उन्होंने कहा कि सम्राट चौधरी बंगला भाषा उन्नयन समिति के बैनर का गलत उपयोग कर धनबाद सांसद ढुल्लू महतो को बदनाम करने की साजिश रच रहा है। सम्राट चौधरी द्वारा किया गया प्रेस वार्ता पूरी तरह राजनीति षड्यंत्र है ना कि बंगला भाषा भाषी का अपमान। उन्होंने कहा कि 22 दिसंबर को निरसा गोपीनाथपुर में मजदूरों के द्वारा दिये गए धरना में सांसद ढुल्लू महतो ने विधायक अरूप चटर्जी के खिलाफ बयान दिए थे। सांसद ने कहा था हम किसी का गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं करेंगे और निरसा को बांग्ला देश नहीं बनने देंगे। सम्राट चौधरी ने सांसद के इस बयान को तोड़ मरोड़ कर बांग्ला भाषा को गलत संदेश देना चाहते हैं । जिसे बंगला भाषा उन्नयन समिति कतई बर्दास्त नही करेगा।बंगला भाषा उन्नयन समिति सांसद का पूर्ण रूप से समर्थन करती है।

बर्थ-डे में मारपीट कर पेशाब पिलाए जाने पर किशोर ने की आत्महत्या

बस्ती। जिले के कप्तानगंज थाना क्षेत्र के कोइलपुरा गांव में 17 वर्षीय नाबालिग किशोर ने फंदे से लटक कर जान दे दी, इस आत्महत्या के पीछे की परिजनों ने जो वजह बताई उसको जान कर आप के पैरों तले जमीन खिसक जाएगी,नाबालिग किशोर को बर्थडे पार्टी के बहाने बुलाया गया, उस को नंगा कर के पहले जमकर पीटा फिर उस के मुंह पर पेशाब कर दिया, परिजनों का आरोप है कि इस घिनौनी हरकत का वीडियो बना कर वायरल करने की धमकी देने लगे7जिससे आहत होकर नाबालिग किशोर ने मौत को गले लगा लिया7प्राप्त समाचार के अनुसार यह घटना 20-21 की रात की है नाबालिग किशोर आदित्य को गांव के विनय कुमार ने फोन कर बर्थडे पार्टी में बुलाया, जब आदित्य रात में बर्थडे पार्टी में शामिल होने गया तो वहां पर चार लोग मौजूद थे, इन लोगों ने पहले आदित्य को नंगा करके जमकर मारा पीटा उसके बाद उस के मुंह में पेशाब कर दिया, इस घटना का चारों दरिंदों ने वीडियो भी बना लिया और वीडियो को वायरल करने को धमकी देने लगे, जब आदित्य ने वीडियो डिलीट करने की मिन्नत की तो उसको थूक कर चटाया और वीडियो वायरल करने की धमकी देने लगे, परेशान होकर आदित्य ने अपने परिजनों को सारी बात बताई, परिजनों ने कप्तानगंज थाने पर तहरीर दी, परिजनों का आरोप है कि पुलिस ने तहरीर ले ली लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की, जिससे दबंगों के हौंसले और बढ़ गए, लगातार प्रताड़ित करने लगे जिससे आहत होकर नाबालिग किशोर ने अपने जीवन की लीला समाप्त कर ली, कार्रवाई न होने से नाराज़ परिजन शव लेकर कप्तानगंज थाना पहुंच गए, घंटों इंतजार के बाद भी जब कार्रवाई का कोई आश्वासन नहीं मिला तो परिजन शव को लेकर एसपी कार्यालय पहुंच गए जिसके बाद हड़कंप मच गया, बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स पहुंच गई, दो सीओ पहुंचे कार्रवाई का आश्वासन मिलने के बाद परिजन शव को पोस्टमार्टम के लिए ले गए,मृतक युवक संतकबीर नगर के निघरी गांव का रहने वाला था जो अपने मामा के घर बस्ती में रहता था, मृतक की मां का आरोप है कि पहले उनके बेटे को नंगा करके मारा पीटा गया और उस के मुंह पर पेशाब करके वीडियो बना लिया, मृतक की मां ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पुलिस ने पैसा खा लिया है जिसकी वजह से कोई कार्रवाई नहीं कर रही है, मृतक के मामा विजय कुमार ने बताया कि बर्थडे के बहाने फोन करके बुलाया पहले से क्या रंजिश थी उस की जानकारी नहीं थी, पहले नंगा करके उस को मारपीटा गया उस के साथ अश्लील हरकत की गई, मुंह पर पेशाब करके वीडियो बना लिया, थाने पर शिकायत की गई लेकिन इस तरह की किसी घटना को दर्शाया नहीं गया और उन के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। सीओ प्रदीप कुमार त्रिपाठी ने बताया कि परिजनों को तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया, मामले की जांच की जा रही है, जो भी दोषी होगा उस के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

व्यापारियों की सुरक्षा हेतु व्यापार मण्डल अध्यक्ष ने थाना प्रभारी को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा

मैथा कानपुर देहात। शीतकाल में रात्रि के समय अपराधी ज्यादातर दुकानों को निशाना बनाते हैं इसी बाबत पर औनहां व्यापार मण्डल अध्यक्ष आशुतोष त्रिवेदी ने सोमवार को पुलिस प्रशासन के साथ बैठक कर बताया कि विगत वर्षों के शीतकाल में औनहां बाजार में अपराधियों ने एक-एक रात में कई दुकानदारों की दुकानों का शटर तोड़कर चोरियां की थीं, जिससे दुकानदारों को काफी नुकसान हुआ था। ठंड का मौसम आते ही व्यापारियों में उन घटनाओं को लेकर भय व्याप्त हो जाता है।साथ ही ज्ञापन सौंपकर औनहां बाजार में गश्त और गहरा चौराहे पर रात्रि में आने - जाने वाले संदिग्ध लोगों से पूछताछ कर व्यापारियों को सुरक्षा के प्रति आश्वस्त करने की मांग की।

गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ बसपा का रणधीर वर्मा चौक पर धरना

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। बहुजन समाज पार्टी धनबाद जिला ईकाई के तत्वाधान में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के द्वारा भारतीय संविधान निर्माता बोधिसत्व बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के प्रति संसद में अमर्यादित एवं उपहास पूर्ण व्यक्तव्य देने के विरोध में बसपा के सुप्रिमो राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन कुमारी मायावती के आदेशानुसार मंगलवार 24 दिसंबर को रणधीर वर्मा चौक समेत पुरे देश में राष्ट्रव्यापी एक दिवसीय जिला में धरना प्रदर्शन किया व उपायुक्त के द्वारा महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन देने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रणधीर वर्मा चौक, धनबाद में धरना की अध्यक्षता बसपा के जिला अध्यक्ष अभय कुमार एवं संचालन जिला प्रभारी सुनिल रविदास ने किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बसपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जोन प्रभारी सुबल दास एवं पूर्व प्रदेश सह सचिव गौतम कुमार उपस्थित थे। मुख्य अतिथी सुबल दास ने कहा कि बहुत दुख की बात है केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के द्वारा भारतीय संविधान निर्माता डा. भीम राव अम्बेडकर के प्रति संसद में अभद्र अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर अपमान किया गया जो बसपा इसे कभी बर्दाश्त नही करेगी। अमित शाह तुरंत माफी मांगे अन्यथा अपने पद से इस्तीफा दे वर्ना बसपा देशव्यापी जनआंदोलन करने के लिए विवश होगी और विधी व्यवस्था बाधित होती है तो केन्द्र सरकार व जिला प्रशासन की जिम्मेवारी होगी। इस कार्यक्रम में धनबाद के जिलाअध्यक्ष अभय कुमार, जिला प्रभारी सुनिल रविदास, जिला उपाध्यक्ष गणेश भारती, मनोज दास, बाबुलाल मुर्मू गौतम कुमार, महेन्द्र राम, दारूलाल दास, अजय रजवार, बलराम बाऊरी श्रीकान्त दास, संतोष दास उदय कु. दास, विनोद पासवान, सहातम राम, ऋष कुमार, अनवरी खातुन, मोहन यादव, रणधीर राम, विश्रु बाऊरी, हिरालाल राम के आलावा अन्य महिलाए व पुरुष मौजूद थे।

ठंडी हवाओं से तापमान में गिरावट की संभावना बढ़ी

सिकंदरा कानपुर देहात। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, कानपुर देहात में अगले कुछ दिनों में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। ठंडी हवाओं के प्रभाव से तापमान में गिरावट हो सकती है। रात का तापमान 7 से 9 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है, जबकि दिन में यह 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।बताया कि ठंड की तीव्रता में वृद्धि होने से सुबह और शाम के समय ठंड अधिक महसूस होगी। आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल छाए रहने की संभावना है, हालांकि बारिश की कोई संभावना नहीं जताई गई है। ठंडी हवाओं के चलते दिन और रात के तापमान में अंतर बढ़ेगा।मौसम विभाग ने किसानों को सलाह दी है कि रबी की फसलों को ठंड से बचाने के लिए उचित देखभाल करें। फसलों की सिंचाई और सुरक्षा के लिए पर्याप्त इंतजाम सुनिश्चित करें। मौसम में बदलाव के मद्देनजर, लोगों को सर्दी से बचने के लिए गरम कपड़े पहनने और स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सलाह दी गई है। ठंड से बचाव के लिए सुबह-शाम अतिरिक्त सतर्कता बरतने की जरूरत है।

किसान दिवस पर कृषि विज्ञान केन्द्र बन्जरिया में किसान मेला का हुआ आयोजन

बस्ती। जिले कृषि विज्ञान केन्द्र बन्जरिया में पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर आत्मा योजनान्तर्गत जनपद स्तरीय भव्य किसान मेला का आयोजन किया गया। मेला का उद्घाटन जिलाधिकारी रवीश गुप्ता,मुख्य विकास अधिकारी जयदेव सी0एस0 तथा विधायक हरैया द्वारा किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा कृषि विभाग एवं सहयोगी विभागों जैसे- उद्यान विभाग, रेशम विभाग,मत्स्य विभाग, फसल बीमा, इफको, कृषि विज्ञान केन्द्र, खाद एवं बीज से संबंधित स्टॉल तथा पशुपालन विभाग से संबंधित स्टॉलों का निरीक्षण किया गया। इसके बाद जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चैधरी द्वारा दीप प्रज्वलित कर उक्त गोष्ठी का विधिवत शुभारम्भ किया गया, जिसमें उन्नतशील कृषि निवेशों, नवीनतम तकनीकी जानकारी एवं शासन द्वारा किसानों के हितार्थ संचालित कृषक उपयोगी विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी कृषकों को दी गयी। संबोधन में जिलाधिकारी ने बताया कि कृषि एवं इसके संवर्गी विभागों द्वारा कृषकों के हित में तमाम योजनायें संचालित हैं वर्तमान में कृषकों की फार्मर रजिस्ट्री की जा रही है इससे किसान भाई अपने किसान कार्ड द्वारा के0सी0सी,फसल बीमा, प्रधान मंत्री किसान सम्मान तथा सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।जिलाधिकारी न किसानो को सुझाव दिया कि किसान भाई कृषि विभाग द्वारा संचालित भूमि परीक्षण प्रयोगशाला में मिट्टी की जांच कराकर ही उर्वरक का प्रयोग करें, जिससे लागत में कमी आयेगी तथा उर्वरक पर निर्भरता भी कम होगी। जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी , विधायक अजय सिंह एवं जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चैधरी द्वारा कृषि समेत उसके संवर्गी जैसे-डेयरी, पशुपालन, सब्जी की खेती, मोटे अनाज की खेती, प्राकृतिक खेती आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसानों को पुरस्कृत किया गया, जिसमें 15 कृषकों को प्रथम पुरस्कार जिसमें प्रमाण पत्र, अंगवस्त्र के साथ रू 7000/,15 कृषकों को द्वितीय पुरस्कार हेतु प्रमाण पत्र,अंगवस्त्र एवं रू 5000/- एवं विकास खण्ड स्तर पर 70 कृषकों को प्रथम पुरस्कार हेतु प्रमाण पत्र, अंगवस्त्र एवं रू 2000/- का पुरस्कार दिया गया इसके अलावा कृषि सखियों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, बंजरिया के वैज्ञानिक डा0 आर0बी0 सिंह ने बताया कि इस समय गेंहूँ तथा सरसों की बुवाई लगभग पूर्ण हो चुकी है, इस वर्ष बुवाई अन्य वर्षों की अपेक्षा 10-15 दिन पहले हो गयी है, इससे हमारा उत्पादन बढ़ेगा। सिंह ने बताया कि सरसों की सिंचाई 35-45 दिन के बाद ही करें, सरसों की कच्ची सिंचाई कदापि न करें, इससे पौधे मजबूत होते हैं। जिनके गेंहूँ की पहली सिंचाई हो चुकी हो वह किसान भाई गेंहूँ में 10 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ जिंक की बुवाई अवश्य करें, इसके साथ ही खरपतवार नाशी का पहले प्रयोग कर फिर उर्वरक का प्रयोग करें।इसके साथ ही गेंहूँ/सरसों में जिंक के साथ माइक्रोन्यूट्रेंट 3 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ डालने से पैदावार बढ़ जाती है। तिलहनी फसलों में 12 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ सल्फर का प्रयोग अवश्य करें। सरसों की पहली सिंचाई के उपरान्त 1 बोरी यूरिया प्रति एकड़ प्रयोग करने से उत्पादन अच्छा मिलता है।

कांग्रेस निकालेगी आज बाबा साहब अम्बेडकर सम्मान मार्च

पुलिस अधीक्षक को सौंपेगे ज्ञापन

कानपुर देहात। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जिला कांग्रेस द्वारा जिला मुख्यालयों 23 दिसंबर को प्रेस वार्ता की गई अकबरपुर स्थिति पार्टी कार्यालय में जिलाध्यक्ष नरेश कटियार ने प्रेस वार्ता में बताया कि 18 वी लोकसभा के शीतकालीन सत्र सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी द्वारा संविधान व संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव आंबेडकर के अपमान के लिए भारतीय संसदीय इतिहास में दर्ज हो गया है बीजेपी हमेशा से लोकतंत्र एवं संवैधानिक मूल्यों को तिरस्कार करने का मौका नहीं छोड़ती है इस तो सारी हद पार करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने जो टिप्पणी की है वह संघ और बीजेपी की मानसिकता उजागर करती हैं कांग्रेस पार्टी गृहमंत्री के इस्तीफे की मांग पर अटल है कल 24 दिसंबर को पार्टी जिला मुख्यालय के समीप सीधामऊ गाँव में बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके उसके बाद बाबा साहब अम्बेडकर सम्मान मार्च निकालते हुए पुलिस अधीक्षक कानपुर देहात को राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन सौंपेगे प्रेस वार्ता में प्रमुख रूप से पीसीसी सदस्य रोहित कटियार, समीम कुरैशी, सगीर अहमद, बृजेन्द्र स्वरुप कटियार, राम अवतार दीक्षित, बसंत लाल, अनिल कटियार, मो कलाम आदि मौजूद रहे।

डीसीएम की टक्कर से बाइक सवार दो दोस्तों की हुई मौत

सिकंदरा कानपुर देहात। कानपुर देहात के इटावा-कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर रात करीब 2 बजे एक तेज रफ्तार डीसीएम ने बाइक सवार इंजीनियर और उसके साथी को जोरदार टक्कर मार दी। हादसा रनियां थाना क्षेत्र के पास हुआ। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक लगभग 20 मीटर तक डीसीएम में फंसी घिसटती रही। दोनों सवार गंभीर रूप से घायल हो गए।हादसे के बाद मौके पर मौजूद राहगीरों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने तुरंत दोनों घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया, लेकिन उपचार के दौरान दोनों ने दम तोड़ दिया। मृतकों में से एक सतीश राठौर (33) पंजाब के रूपनगर जिले के मंडवारा मियनपुर का निवासी था। वह चंडीगढ़ स्थित वीएम पैकेजिंग कंपनी में सर्विस इंजीनियर के पद पर कार्यरत था। उसका साथी अंकुश वर्मा (18) भी उसी फैक्टरी में काम करता था, जहां वे दोनों बाइक से लौट रहे थे।हादसे के बाद डीसीएम चालक मौके से फरार हो गया। थाना प्रभारी मुकेश सोलंकी ने बताया कि शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों को सूचना दी गई है और तहरीर मिलने पर रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। मामले की जांच जारी है।

किसानों के मसीहा एवं देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की मनाई गई जयंती

माती कानपुर देहात। समाजवादी पार्टी कार्यालय के सभागार कक्ष में देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी की जयंती मनाई गई इस अवसर पर अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश सचिव शेखू खान ने कहा चौधरी चरण सिंह जी भारत के किसान राजनेता थे वह एक साधारण परिवार से थे उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के सरकारी खेती के प्रस्ताव का विरोध किया।जातिवाद को खत्म करने के लिए अंतरजाति विवाह को बढ़ावा दिया आज के कार्यक्रम में बऊन भदोरिया विधानसभा महासचिव सिकंदरा अश्वनी संखवार, राजुल यादव, राहुल संखवार, सौरभ यादव, सौरभ शर्मा आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

राजकीय हाई स्कूल जैसलपुर के 34 छात्र छात्राओं को अध्ययन यात्रा के तहत कराया गया भ्रमण

राजपुर कानपुर देहात। राजकीय हाई स्कूल जैसलपुर के छात्राओं के बौद्धिक विकास एवं भविष्य के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार अध्ययन यात्रा राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान एवं फायर स्टेशन सिकंदरा के लिए विद्यालय की प्रधानाध्यापक शबाना, मंडल अध्यक्ष नरेंद्र सिंह एवं संविलियन विद्यालय जैसलपुर के राजेंद्र यादव, अर्पित, देवेंद्र सिंह, सौरभ के द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। सिकंदरा तहसील क्षेत्र के राजकीय हाईस्कूल जैसलपुर के कक्षा 9 व 10 के 34 छात्राओं को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान आई टी आई कौरौवा में अध्ययन यात्रा के अंतर्गत ले जाया गया जहां पर शिक्षक शिवम तिवारी एवं कार्यदेशक अमर नाथ ने भ्रमण कराते समय बताया कि संस्थान में 12 ट्रेडों को कक्षा 10 उत्तीर्ण करने के बाद प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है जिसमें कंप्यूटर, ब्यूटीशियन, वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन, प्लास्टिक, फिटर आदि की कक्षाओं के स्मार्ट क्लास और प्रयोगशाला को दिखाया शिक्षक प्रेम प्रकाश, रमेश मिश्रा ने आईटीआई से नौकरी एवं स्व रोजगार प्राप्त करने के लाभ को भी बताया फायर स्टेशन सिकंदरा के प्रभारी महेंद्र सिंह, राजेश सिंह, शबशरण ने छात्रों को आग बुझाने का प्रशिक्षण दिया विद्यालय की प्रधानाध्यापक शबाना की अभिभावकों ने प्रशंसा की शिक्षक सुशील कुमार, अभिषेक मिश्रा ने अध्ययन यात्रा को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

अपने आखिरी सांस तक पत्रकारों की आवाज कभी दबने नहीं दूंगा: राष्ट्रीय अध्यक्ष शील गहलौत

प्रतापगढ़,सुल्तानपुर। अखण्ड पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन भारत (पंजीकृत) की एक महत्वपूर्ण बैठक सुल्तानपुर जिले के लंभुआ तहसील में आयोजित हुई जिसमें जिले के तमाम पदाधिकारी एवं सदस्यों की मौजूदगी रही। और पुनः जिले की कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। जिसमें संगठन में आस्था रखते हुए तमाम पत्रकारों ने अपवा की सदस्यता ली। वरिष्ठ पत्रकार मनोज कुमार रजक को जिलाध्यक्ष, अमरजीत पांडेय उपाध्यक्ष, विमलेश कुमार को महामंत्री, संजय कुमार कसौधन संगठन मंत्री, संतोष कुमार पांडेय कोषाध्यक्ष, मनोज कुमार राणा आय व्यय निरीक्षक, वरिष्ठ पत्रकार डॉ अशोक कुमार वर्मा सलाहकार, रविन्द्र नाथ दुबे तहसील अध्यक्ष लंभुआ, भास्कर पांडेय तहसील अध्यक्ष जयसिंहपुर मनोनीत किया गया। बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में पहुंचे अखण्ड पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं दैनिक सावन साहिल व न्यूज सावन साहिल समाचार पत्र के संपादक शील गहलौत ने दीप प्रज्ज्वलित करने के पश्चात मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के बाद बैठक का शुभारंभ किया। बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा की अपवा सभी पत्रकारों के मान सम्मान और अधिकार की लड़ाई व्यापक स्तर पर लड़ रहा है।

पत्रकार सुरक्षा, पत्रकार बीमा, पत्रकार आयोग, पत्रकार अधिनियम, पत्रकार पेंशन और कवरेज करने गए पत्रकार के आकस्मिक मृत्यु होने पर आर्थिक मदद, दुर्घटना होने की स्थिति में उपचार अनुग्रह राशि प्रदान किए जाने के साथ ही पत्रकार के परिजनों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्रदान किए जाने की सरकार से मांग किया जाता रहा है। आगे राष्टीय अध्यक्ष ने कहा कि पत्रकार सदैव अपनी जान जोखिम में डाल करके पीड़ितों की आवाज बनने का काम सदियों से करता आ रहा है।

सुबह से निकलने वाला पत्रकार शाम को घर तो किसी तरह पहुंच जाता है पर घर की अन्य जरूरत की भरपाई करने में वह असमर्थ रहता है ऐसी स्थिति में सरकार से मांग करते हुए कहा है कि नियमित पत्रकारों को हर महीने मानदेय की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाय। आगे राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि अपवा पत्रकारों की आवाज को एक अरसे से बुलंद करता रहा है यह आवाज मेरे आखिरी सांस तक अपनी मांगों को मनवाने तक बुलंद होती रहेगी। पत्रकारों की आवाज बुलंद करते करते आज यह अपवा संगठन हर पत्रकारों के लिए उपयोगी साबित हो रहा है। आज या संगठन उत्तर प्रदेश से लेकर के बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, दिल्ली, गुजरात, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान आदि प्रदेशों तक व्यापक स्तर तक संघर्षरत है।

अपवा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्वांचल प्रभारी जितेंद्र श्रीवास्तव ने कहा कि यह संगठन पत्रकारों के लिए वरदान साबित हो रहा है। आने वाले दिनों में या संगठन एक साथ एक आवाज बन कर कर के सरकार को पत्रकारों के हक और अधिकार की जनहित मांगों को मनवाने के लिए बाध्य कर देगा।

भाषण और निबंध प्रतियोगिता में जीते आठ पुरस्कार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ । पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई के जन्म शताब्दी वर्ष के मौके पर हजरतगंज स्थित केडी सिंह बाबू स्टेडियम में निबंध और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में बाल निकुंज कॉलेज के सात मेधावियों को प्रथम और एक मेधावी को द्वितीय पुरस्कार मिला। यह जानकारी स्कूल के प्रबंध निदेशक एचएन जायसवाल ने दी। उन्होंने बताया कि जूनियर वर्ग में अंग्रेजी माध्यम की निबंध प्रतियोगिता में बाल निकुंज इंटर कॉलेज के कक्षा-8 के हर्षवर्धन को प्रथम पुरस्कार, हिन्दी माध्यम में आर्यन सिंह को प्रथम पुरस्कार मिला। वहीं सीनियर वर्ग की अंग्रेजी माध्यम की निबंध प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में वंशिका यादव को और बालक वर्ग में आरव गौतम को प्रथम स्थान मिला। इसके अलावा हिन्दी माध्यम में आरुषि प्रजापति को प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं भाषण प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में अंग्रेजी माध्यम में कॉलेज के दिव्यांश तिवारी को प्रथम और हिन्दी माध्यम में प्रणव मिश्रा को प्रथम तथा उमंग चौरसिया को द्वितीय पुरस्कार मिला।

धनबाद की बेटी बीपीसीसी शिक्षक में चयनित हुई

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

जोरापोखर/ धनबाद। जेलगोड़ा 7 न. निवासी प्रकाश शर्मा जी की पुत्री निधि शर्मा का चयन बिहार बीपीसीसी शिक्षक में चयन हुआ निधि शर्मा ने कहा की मैंने विगत दो

वर्षों से श्री मनन करियर सेंटर में सरकारी नौकरी के लिए तैयारी कर रही थी मेरा सफलता के पीछे माता पिता के साथ संस्था के शिक्षक मनंजय पाठक सर एंव सभी शिक्षक का योगदान रहा।

गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों के शहादत पर वीर बाल दिवस का आयोजन

सीतापुर। भाजपा नगर दो द्वारा गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत दिवस के अवसर पर स्थानीय मुंशीगंज के एक विद्यालय में वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन विजय कुमार शुक्ला ने किया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि में समाजसेवी भाजपा निवर्तमान जिला अध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा को पटका पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में मुख्य अतिथी श्री मेहरोत्रा सहित सभी कार्यकर्ताओ ने सिक्खो के दसवे गुरु गोविंद सिंह सहित उनके पुत्रो के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। संगोष्ठी के दौरान मुख्य अतिथि श्री मेहरोत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से विगत वर्ष गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के दोनों छोटे साहिबजादों, बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह के बलिदान दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मान्यता मिली। इसके परिणाम स्वरुप वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। अधिवक्ता विजय कुमार अवस्थी ने कहा वीर बाल दिवस खालसा के चार साहिबजादों के बलिदान को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है. अंतिम सिख गुरु गोबिंद सिंह के छोटे बच्चों ने अपने आस्था की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे । शिव बालक त्रिवेदी ने कहा गुरु गोबिंद सिंह जी के चारों साहिबजादे धर्म के लिए शहीद हो गए जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए वीर बाल दिवस मनाने की शुरुआत की गई है। संगोष्ठी के अंत में पूर्व नगर अध्यक्ष श्री प्रकाश सिंह ने सभी का आभार जताया। इस दौरान आकाश राय, ऋषभ त्रिवेदी, सचिन त्रिपाठी, अंजनी शुक्ला, शिव कुमार शास्त्री, प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव, कमलेश गुप्ता, अनिल किशोर श्रीवास्तव, आकाश मिश्रा, अनिल निषाद, राहुल अवस्थी सहित विधालय के सैकड़ो छात्र छात्राए व शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

किसान देश के अर्थतंत्र और खाद्य सुरक्षा का आधार हैं: मुख्य सचिव

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। किसान देश के अर्थतंत्र और खाद्य सुरक्षा का आधार हैं। उनके कठिन परिश्रम और समर्पण के कारण ही हमारा देश समृद्ध और सुरक्षित है। यह बात इंटीग्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी में आयोजित राष्ट्रीय किसान दिवस के आयोजन पर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि स्व. चौधरी चरण सिंह के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। जिन्होंने आज किसानों के अधिकारों के लिए ऐतिहासिक संघर्ष किया और उनके कल्याण के लिए अनेक कदम उठाए। मुख्य सचिव ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि क्षेत्र के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने कृषि क्षेत्र में कई नए कदम उठाए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार कृषि सर्वेक्षण के लिए रिमोट सेंसिंग तकनीकों का उपयोग कर रही है। जिससे भूमि और फ सल की स्थिति का सटीक आंकलन किया जा सके। इस मौके पर मुख्य सचिव ने बताया कि बीते 10 दिसंबर को वॉशिंगटन में वर्ल्ड बैंक के साथ यूपी एग्रीज नाम से 4000 करोड़ रुपये की लागत का एक प्रोजेक्ट पारित हुआ है। इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य यूपी के कम कृषि उत्पादन वाले 28 जिलों की कृषि उत्पादन क्षमता को राष्ट्रीय औसत के ऊपर लाना है।

जिलाधिकारी ने जनसुनवाई के दौरान शिकायतकर्ताओं की सुनी समस्याएं

प्रतापगढ़। जिले में जिलाधिकारी संजीव रंजन ने सोमवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। शिकायतकर्ता अल्ताफ, कमरूज्जमां, रिजवान, मुख्तार अहमद आदि ग्रामसभा डीहमेंहदी बाबूगंज बंजर खाते की भूमि पर नवाब हुसैन जबरन शक्ति के बल पर नव निर्माण कर कब्जा कर ले रहा है, ईट व मोरंग मिट्टी आदि जमा करके सम्पूर्ण ग्रामसभा भूमि पर चहरदीवारी का निर्माण कर रहा है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी लालगंज व एसओ लीलापुर को निर्देशित किया कि ग्रामसभा की जमीन पर कब्जा न होने यह सुनिश्चित किया जाये और आख्या उपलब्ध करायें। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त राजस्व शिकायतों के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच कर, शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से करें जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। उन्होने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करें, कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहें इसका विशेष ध्यान दें। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जनता की शिकायतों को शासन की मंशानुरूप गुणवत्तापूर्ण निस्तारण ससमय करायें, शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही कदापि न बरती जाये।

स्कूल ऑफ ड्रीमवे में वार्षिक उत्सव का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

चिरकुंडा/ धनबाद। चिरकुंडा के कुमारधुबी स्टेशन रोड के समीप स्थित स्कूल ऑफ ड्रीमवे में मंगलवार को वार्षिक उत्सव सह पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। स्कूल के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम कर अभिभावकों कों मंत्रमुग्ध कर दिया।बच्चो ने नारी शक्ति थीम डांस,नारी शिक्षा थीम डांस,वो कृष्णा है,ढोल बाजे,मिक्स वोलीवुड डांस,गरबा मिक्स सालो डांस,पंजाबी मिक्स डांस आदि कर लोगों को झुमाते रहे। वहीं विभिन्न प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को नगर परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष डब्लू बाउरी,मुरलीतुरी व स्कूल के प्रधानाध्यापक राजनारायण साव ने शिल्ड व प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्कूल के प्रधानाध्यापक राजनारायण साव,श्रवण साव,खुशबु कुमारी,अग्रीमा सिंह,आकाश वर्मा,अनुष्का आदि थे।

एलिट पब्लिक स्कूल में वार्षिक उत्सव का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

चिरकुंडा/ धनबाद। एलीट पब्लिक स्कूल चिरकुंडा में रविवार की संध्या वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया।मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक अरूप चटर्जी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किए।स्कूल के छात्र छात्राओं ने गणेश वंदना,नारी शक्ति,बंगाली डांस,ड्रामा ऑन डीसीपीलीन,वीश यू मेरी क्रिसमस,विभिन्न राज्यों पर नृत्य,ड्रामा ऑन करप्शन सहित विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम कर अभिभावकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।कार्यक्रम को सफल बनाने में स्कूल के प्रधानाध्यापक इरफान अहमद खान,संजीव साव,निरंजन साव,प्रकाश साव,सुनिता,निनोती,विनोद, रिताली,राखी आदि थे।

दिव्यांग रेप पीड़िता को न्याय दिलाने डालसा की टीम पहुंची अस्पताल

धनबाद। झालसा के तत्वाधान मे प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार वीरेंद्र कुमार तिवारी के निर्देश व सचिव डालसा राकेश रौशन के आदेश पर डालसा की टीम पहुंची एसएनएमएमसीएच हॉस्पिटल डॉ. गिनदोरिया और डॉक्टर राजलक्ष्मी एचओडी स्त्री रोग विभागाध्यक्ष से बात कर पीड़िता एवं उनके परिजनों से मिलकर समुचित इलाज सुनिश्चित करवाया गया साथ ही सरायढेला थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया कि आरोपी को जल्द से जल्द पड़कर न्यायालय के समक्ष हाजिर किया जाए, सचिव डालसा ने बताया कि पीड़िता को जल्द ही इंटिरिम मुआवजा राशि दिलाया जाएगा ताकि पीड़िता का भविष्य सुगम हो सके।और इसी दौरान एसएनएमएमसीएच के इमरजेंसी विभाग के बाहर लावारिस अवस्था में पाए मोहम्मद आशिक जो कि डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन रोड हजारीबाग का रहने वाले है पूछने से पता चला कि उनकी यह स्थिति देखकर उनके परिजन यहां पर छोड़ कर चले गए। जिनके दोनों पैर पूरी तरह से जख्मी एवं कीड़े पड़े हुए हैं। जिनको विछिप्त अवस्था में कुत्ते ने चार्ट रहे थे उनको भी डालसा के टीम द्वार द्वारा एडमिट करा कर उनका ड्रेसिंग करवा कर समुचित इलाज सुनिश्चित करवाया गया।गठित टीम एल ए डी सी एस सहायक सुमन पाठक ,राजेश कुमार सिंह , अनामिका सिंह,श्याम झा , वीरेंद्र कुमार,नवीन कुमार , हेमराज चौहान,ज्योति कुमारी की उपस्थिति मे राहत पहुंचाने का कार्य किया गया। मौके पर सरायढेला थाना की टीम भी उपस्थित थी।सचिव डालसा ने बताया कि ऐसे लोगों के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकार एवं उसकी टीम हमेशा तत्पर है ।

धूमधाम से मनाया गया किसानों के मसीहा स्व0 चौधरी चरण सिंह का जन्मदिवस

➲ एग्रोक्लाईमेटिक किसान मेले में सिखाये गये खेती के गुर ➲ किसान हमारी असली जागीर: विधायक मिश्रिख

सीतापुर। पूर्व प्रधानमंत्री व किसान नेता स्व0 चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस के अवसर पर किसान सम्मान समारोह व एग्रोक्लोईमेटिक किसान मेला का आयोजन कृषि भवन खैराबाद के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक मिश्रिख रामकृष्ण भार्गव के द्वारा विभिन्न विभागों के स्टालों का निरीक्षण करने के उपरान्त द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित कृषि एवं अनुषांगिक विभागों के अधिकारियों के साथ विधायक मिश्रिख व विधायक सदर के प्रतिनिधि द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक के0वी0के0 अम्बरपुर डा0 वी0 के0 सिंह ने प्रमुख रबी फसलों की उन्नत खेती, सहायक विकास अधिकारी (कृषि रक्षा) सुरेन्द्र सिंह द्वारा फसलों को कीट एवं रोगों से बचाव, इफको प्रबन्धक द्वारा उर्वरकों के संतुलित प्रयोग तथा नैनो यूरिया एवं नैनो डी0ए0पी0 की प्रयोगविधि मात्रा सहित फायदे बताये। कार्यक्रम में प्रगतिशील कृषक योगेश कुमार द्वारा मधुमक्खी पालन व अब्दुल हादी द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में किये जा रहे अपने प्रयासों तथा अनुभवों को किसान भाइयों के साथ साझा किया गया। विधायक मिश्रिख द्वारा जनपद जनपद में कृषि, उद्यान, गन्ना तथा मत्स्य उत्पादन के अन्तर्गत विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल 35 कृषकों को जनपद स्तर पर प्रथम पुरूस्कार के रूप में रू0 7000/- व प्रमाण पत्र तथा द्वितीय पुरूस्कार के रूप में रू0 5000/- व प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया (सूची संलग्न)। अन्न/प्राकृतिक खेती व कृषि से सम्बन्धित नवोन्मेशी कार्य हेतु चयनित कृषकों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। विधायक द्वारा किसानों को देश की असली जागीर बताते हुये किसान भाइयों से अपील की गयी वे खेती के क्षेत्र में नवाचारों को अपनाएं साथ ही अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा अवश्य दिलायें। कार्यक्रम में आनन्द प्रकाश एण्ड पार्टी वि0ख0-मछरेहटा द्वारा कठपुतली के माध्यम से किसानों को अपनी प्रस्तुतियों द्वारा कृषि विभाग की योजनाओं का मनोरंजक तरीके से कृषि सम्बन्धी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करायी गयी। अन्त में उप कृषि निदेशक, सीतापुर द्वारा सभी किसान भाइयों से फार्मर रजिस्ट्री में पंजीकरण कराये जाने की अपील करते हुये सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला कृषि अधिकारी, सीतापुर मनजीत कुमार द्वारा किया गया। पूर्व उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी वीरेन्द्र सिंह द्वारा चौधरी चरण सिंह के जीवन पर चर्चा की गयी। कार्यक्रम में परियोजना निदेशक/प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक के0वी0के0 कटिया व अम्बरपुर व अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

एसएसडी पब्लिक स्कूल में ईसा मसीह का काफी धूमधाम से मनाया गया जन्मदिन

➲ सेंटा क्लास की ड्रेस पहनकर बच्चों को उपहार किए वितरित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। क्रिसमस डे की पूर्व संध्या पर मंगलवार को सरोजनीनगर द्वितीय वार्ड के अलीनगर सुनहरा स्थित एसएसडी पब्लिक स्कूल में ईसा मसीह का जन्मदिन काफी धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने सांता क्लास की ड्रेस पहनकर बच्चों को उपहार वितरित किए। साथ ही विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य कर क्रिसमस डे मनाया। प्रबंधक रामानंद सैनी ने ईसा मसीह के जीवन पर विस्तार से बच्चों को जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यीशु मसीह ने अपने जीवन में मानवता की रक्षा के लिए अमूल्य समय समर्पित किया और उसके बाद उसकी रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति भी दे दी। उन्होंने कहा कि जो मानवता के कल्याण के लिए कार्य करते हैं, उनके जीवन में ऐसी बाधाएं आती हैं। लेकिन महापुरुष ऐसी बाधाओं से विचलित नहीं होते और बाद में वही भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। उन्होंने कहा कि प्रभु यीशु मसीह सभी से प्रेम करने और मानव अधिकारों की रक्षा करने का संदेश देते हुए अमर हो गए। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के अन्य शिक्षकों ने भी प्रभु यीशु के बारे में विस्तार से बच्चों को जानकारी दी। जिसमें शिक्षिका मधु अवस्थी, शिवानी वर्मा, जानवी सिंह, कैलाश शर्मा, प्रीति राय, सर्वेश कुमार, मीना रावत, जितेंद्र कुमार और स्नेह लता यादव मुख्य रहे।

चौधरी चरण सिंह की जयंती पर किसान सम्मान समारोह एवं जैविक मेला का किया गया भव्य आयोजन

किसान मजबूत होगा तो देश मजबूत एवं विकसित होगा: विधायक विश्वनाथगज

प्रतापगढ़। जिले में सोमवार को स्व0 चौधरी चरण सिंह (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) जी के जन्म दिवस के अवसर पर कृषि विभाग परिसर में किसान सम्मान समारोह एवं जैविक मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि विभाग परिसर में लगाये गये विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी का अवलोकन जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, किसानों एवं जनसामान्य द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल, जिलाधिकारी संजीव रंजन, मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, सांसद प्रतिनिधि बी0एल0 पटेल, विधायक सदर प्रतिनिधि अरूण कुमार मौर्य, उप कृषि निर्देशक विनोद कुमार यादव, जिला कृषि अधिकारी अशोक कुमार, भूमि संरक्षण अधिकारी चमन सिंह, कृषि वैज्ञानिक व उन्नतिशील कृषक तथा अन्य सम्बन्धित उपस्थित रहे। स्व0 चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों ने स्व0 चौधरी चरण सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उप कृषि निदेशक विनोद कुमार यादव ने आये हुये अतिथियों को कृषि उत्पाद से सम्बन्धित उपहार देकर स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रयागराज के कलाकार कंचन लाल यादव की टीम ने लोकगीत आदि के माध्यम से कृषि पर आधारित मनोहारिक गीत की प्रस्तुति की तो वही साकेत गर्ल्स कालेज व राजकीय बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुति की गयी जिसका वहां पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों ने खूब प्रशंसा की। कार्यक्रम में सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन योजनान्तर्गत किसान सम्मान दिवस में जनपद/विकास खण्ड स्तर पर कृषि,

पशुपालन, प्राकृतिक खेती एवं उद्यान में अधिक उत्पादन प्राप्त करने वाले उन्नतिशील/प्रगतिशील कृषको को जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने माल्यार्पण कर, अंगवस्त्र एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उन्नतिशील कृषकों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले कृषकों को 7 हजार एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले कृषकों को 5 हजार रूपये डीबीटी के माध्यम से सीधे उनके खाते में हस्तान्तरित किये गये। साकेत गर्ल्स कालेज एवं राजकीय बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं को अतिथियों द्वारा उपहार स्वरूप थर्मस देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल ने किसानों को भूतपूर्व प्रधानमंत्री के जन्म दिवस की बधाई देते हुये कहा कि किसान मजबूत होगा तो देश मजबूत एवं विकसित होगा, किसान देश की रीढ़ होते है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने किसानों के जीवन में खुशहाली लाने एवं उनके आय में वृद्धि करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है और विभिन्न योजनायें संचालित कर किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। नये-नये तकनीकी कृषि यंत्र के माध्यम से किसानों के उपज में बढ़ोत्तरी हो रही है और उनके उपज को देश व विदेश में भेजा जा रहा हैं। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह जी ने किसानों के हित के लिये विभिन्न प्रकार आन्दोलन की लड़ाई लड़ी और अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होने कहा कि यदि किसान मजबूत होगा तो देश मजबूत और विकसित होगा। उन्होने किसानों से कहा कि नई-नई तकनीकों का प्रयोग कर अपनी उपज को बढ़ाये और देश को आगे ले जाये। इस अवसर पर जिलाधिकारी संजीव रंजन ने किसानों एवं जनसामान्य को सम्बोधित करते हुये कहा कि जनपद में कृषि की सम्भावनायें बहुत है, कृषि में बहुत सारे क्षेत्र के युवा आ रहे है और कृषि के विभिन्न उपज का उत्पादन कर अच्छी पैदावार करके लाभ प्राप्त कर रहे है। जनपद में स्ट्राबेरी, केले आदि की खेती की जा रही है। किसान भाई अपने खेतों में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन कर समृद्धि ला सकते है। बिना किसानों के जीवन सम्भव नही है, किसानों के वजह से देश आत्मनिर्भर होकर चल रहा है। किसानों की मेहनत के कारण पूरा भारत अन्न खाता है। किसानों की आय में बढ़ोत्तरी एवं प्रगति हेतु केन्द्र एवं प्रदेश सरकार निरन्तर किसानां के हित कार्य कर रही है और उन्हें योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने किसानों से अपील करते हुये कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ लेने हेतु फार्मर रजिस्ट्री व केवाईसी का कार्य अवश्य करा लें और फैमिली आईडी के कैम्प लगाये जा रहे है, प्रधानों से सम्पर्क कर फैमिली आईडी अवश्य बनवा लें।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि बीएल पटेल, विधायक सदर प्रतिनिधि अरूण कुमार मौर्य ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर उप कृषि निदेशक विनोद कुमार यादव ने कृषि विभाग की योजनाओं पर प्रकाश डाला और बताया कि प्रदेश स्तर पर उर्द के उन्नतिशील कृषक राज नारायन मिश्रा जो विकास खण्ड मानधाता के बागेवापुर रहने वाले को पुरस्कृत किया गया है। कार्यक्रम का खबर संचालन डा0 मो0 अनीस एवं धर्मेन्द्र ओझा ने किया।

अल्फा हूं पर किसी पर अधिकार नहीं जमाती

आयुषी खुराना

मध्य प्रदेश की आयुषी खुराना ने एक्ट्रेस बनने के अपने सपने को हकीकत में बदला। मुंबई में शुरुआती संघर्षों और बेंगलुरु में पढ़ाई के बाद, उन्होंने फिर से कोशिश की और टीवी जगत में अपनी जगह बनाई। आयुषी खुराना ने अपने सपनों को साकार करने के लिए लंबा स्ट्रगल किया उन्होंने बताया कि वह एक मजबूत लड़की हैं, जो अपनी जिम्मेदारियों को खुद उठाती हैं आयुषी खुराना ने कहा कि पिता के कहने पर एक साल का समय तय किया था कि अगर बात नहीं बनी तो लौट जाएंगी ख्वाहिशें कुछ ऐसी होती हैं, जिन्हें हकीकत में बदलना तो चाहते हैं लेकिन कई बार सफ्ल ना होने पर छोड़ देते हैं। फिर भविष्य में आती है काश की कोफ्त, जो रह-रहकर सताती रहती है। टीवी एक्ट्रेस आयुषी खुराना भले पहली बार में एक्ट्रेस बनने के सपने से दूर हो गई हों लेकिन काश के दर्द से बचने के लिए उन्होंने फिर कोशिश की और अपनी ख्वाहिश को हकीकत में बदल दिया। मध्य प्रदेश के बुरहानपुर की अभिनेत्री आठ साल से घर से दूर हैं। इस दौरान उन्होंने जीवन के कई अच्छे-बुरे अनुभव लिए और इन्हीं अनुभवों से अपनी अदाकारी को निखारा। कुछ समय में ही कई सीरियल्स का हिस्सा रह चुकीं आयुषी इन दिनों शो जाने अनजाने हम मिले में नजर आ रही हैं। बीते दिनों वह लखनऊ आईं तो अल्फा बनने से लेकर टीवी तक पहुंचने के सफर के बारे में बहुत कुछ बताया। मैंने अपनी जिम्मेदारियां खुद उठाई हैं मैं एक मजबूत लड़की हूं और अपनी मर्जी चलाती हूं। इसी वजह से अल्फा वाली बात से रिलेट कर गई। फिर भी ऐसा नहीं है कि बहुत डॉमिनेटिंग हूं लेकिन हां, मैं एक ऐसी लड़की हूं, जो अपनी जिंदगी खुद संभालती है। उसे खुद हैंडल करती है। अपने सारे फैसले खुद लेती है। मैंने अपनी जिम्मेदारियां भी खुद उठाई हैं। मैं अल्फा हूं पर किसी और पर अधिकार नहीं जमाती। मैं प्रोवाइडर जरूर हूं लेकिन शासन करने या हक जमाने वाली बात मेरे अंदर नहीं है क्योंकि मैं फ्रीडम ऑफ चॉइस पर भरोसा करती हूं। आशा करती हूं कि ऐसे लोग किसी को ना मिलें हमेशा से मेरे मन में आर्टिस्ट बनने का सपना था। डांस में बचपन से दिलचस्पी रही लेकिन मम्मी का सपना था कि ऐक्टर बनूं और टीवी पर दिखूं। जब लगा कि बड़ी हो गई और खुद को संभाल सकती हूं, तब तय किया कि मुंबई जाकर ऑडिशन देने चाहिए। 17 साल की उम्र में मुंबई आ गई। यह ऐसी नगरी है कि हर किसी को सूट नहीं करती। बात 2017 की है। बहुत मेहनत की पर कड़ियां जुड़ नहीं पाईं क्योंकि कुछ पता नहीं था। ऐसे लोग भी मिले, जिनके लिए मैं आशा करती हूं कि किसी को ना मिलें। वे आपको गलत राह पर ले जाएंगे। उस वक्त मैंने ऐक्टर बनने की ख्वाहिश छोड़ दी। मेरा तीन-चार साल का स्ट्रगल रहा। फिर बेंगलुरु जाकर ग्रैजुएशन पूरा किया, जॉब की। ढेर सारे पैसे इकट्ठे किए। फिर मुंबई आई, तब लगा कि अब इतनी मजबूत हो गई हूं कि बुरे लोग आएंगे तो उन्हें संभाल लूंगी। कई बार छोटे शहर से आने के बाद आप खुद को संभाल नहीं पाते और बड़े शहर में खो जाते हैं। अब मुंबई में चार-पांच साल हो गए हैं तो यह शहर अपना सा लगने लगा है। काश पर कुछ नहीं छोड़ना चाहती थी मैं मेकअप कोर्स के बहाने मुंबई में ऐक्टर बनने आई थी। पापा को बताया तो उन्होंने पहले ढेर सारी छानबीन की। मैंने सोचा था कि कार्तिक आर्यन की तरह पढ़ाई के बहाने मुंबई में ऐक्टिंग कर लूंगी। उन्हें तो काम मिल गया पर मुझे नहीं मिला। फिर बेंगलुरु गई। वहां खुद को मजबूत किया और लगा कि एक और मौका देना चाहिए। मैं भविष्य में काश के ऊपर कुछ नहीं छोड़ना चाहती थी। लॉकडाउन के बाद एक और चांस लिया।

उस वक्त पापा ने कह दिया था कि तुम्हारे पास एक साल है। अगर टीवी में दिख गईं तो ठीक, वरना वापस लौटना पड़ेगा। वो एक साल बहुत दबाव वाला रहा था। मेरे दिमाग में लीड एक्ट्रेस का खयाल था। फिर लगा कि लीड के चक्कर में पड़ी रही तो पता नहीं काम मिले या नहीं। मैंने हर तरह के निगेटिव-पॉजिटव शेड वाले किरदारों के लिए ऑडिशन देने शुरू किए। आठ महीने बाद मुझे पहला नेगेटिव रोल मिला। पापा बहुत खुश तो नहीं थे, तब भी उन्हें लगा कि चलो टीवी पर दिख तो गए। उसके बाद तो रुकने का नाम नहीं मिला। अनुभव से ही ऐक्टिंग निखरती है मुझे घर से बाहर अकेले रहते हुए आठ साल हो गए हैं। तीन साल बेंगलुरु में रहीं और पांच साल से मुंबई में हूं। अकेले रहने के दौरान इतने सारे अनुभव मिले, जिसने मुझे मजबूत बना दिया। मुझे लगता है कि जितने अनुभव जीवन में लोगे, उतनी ही अच्छी ऐक्टिंग भी कर पाओगे। अनुभव से ही ऐक्टिंग निखरती है। काफी कुछ सीखा है और आगे भी सीखती रहूंगी। मैं सबसे यही कहती हूं कि आप छोटे से छोटे शहर से क्यों ना हो लेकिन बिना डर बाहर निकलो। ढेर सारे अनुभव लो। मेहनत करो। हालांकि, बाहर अकेले रहने के दौरान थोड़ी समझदारी दिखानी जरूरी होती है क्योंकि चीजें कई बार बिगड़ भी सकती हैं। हम ऐक्टर भी आपके बीच से ही निकले हैंकई बार लोगों को लगता है कि आप ऐक्टर हो तो हमेशा खूबसूरत ही दिखोगे। लड़कियों की जिंदगी में इतने हॉरमोनल प्रॉब्लम चलते हैं कि वो हमेशा एक जैसी नहीं लग सकतीं। हमारे चेहरे पर भी पिंपल्स या अन्य स्किन प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। हम भी इंसान हैं। हमारी जिंदगी में वही समस्याएं हैं, जो आपकी जिंदगी में हैं। मैं एक ऐक्टर होने के नाते हमेशा कहती हूं कि आप (दर्शक-प्रशंसक) हैं तो हम हैं। हम आपके बीच से ही निकले हैं। लोग कई बार एक्ट्रेस को ट्रोल करते हैं कि देखो इनके चेहरे पर कितने दाग हैं या कैसे नजर आती हैं। ऐसा लोग शायद इसलिए करते हैं क्योंकि उनके पास और कुछ करने के लिए नहीं होता है।नानी की शादी भी आटा-साटा प्रथा से हुई थी मुझे पहले नहीं पता था कि आटा-साटा प्रथा मेरे घर में भी हुई थी। मुझे जब शो की प्रोड्यूसर से इसके बारे में पता चला तो मैंने मम्मी से आकर बात की। कहीं ना कहीं मुझे यह पता था कि मध्य प्रदेश में भी ऐसी कोई प्रथा है।

मेरी मां महाराष्ट्र से हैं तो वहां भी यह प्रथा थी। उन्होंने बताया कि तेरी नानी के साथ भी ऐसा ही हुआ है। उस वक्त बहुत खुशी-खुशी इसे स्वीकार किया गया था। नानी अपने यहां आई थीं और उनके भाई से उनकी ननद की शादी हुई थी। लोग मानते थे कि हमारे घर से बेटी जा रही तो दूसरे घर से बेटी आ भी रही है। फिर आप बहू को भी बेटी की तरह ही रखोगे। मुझे तब पहली बार पता चला कि जो शो मैं करने जा रही हूं, उसके तार कहीं ना कहीं मेरे परिवार से भी जुड़े हैं।

'शाहरुख खान कमाल के मिमिक्री आर्टिस्ट हैं'

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ऐसे एक्टर हैं, जो बॉलीवुड के तीनों खान के साथ काम कर चुके हैं। हाल ही में म्यूजिक वीडियो 'यंता' की लॉन्चिंग पर एक्टर ने बॉलीवुड के तीनों खान के साथ काम करने का अपना अनुभव शेयर किया। उन्होंने कहा कि शाहरुख खान कमाल के मिमिक्री आर्टिस्ट हैं। फिल्म 'रईस' की शूटिंग के दौरान जब उन्होंने प्रोड्यूसर-डायरेक्टर विधु विनोद चोपड़ा की कॉपी की, तो लगा कि विधु विनोद चोपड़ा आ गए। दैनिक भास्कर से खास बातचीत के दौरान नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने और क्या कहा? पढ़िए बातचीत के कुछ खास अंशउम्यूजिक वीडियो 'यंता' में पहली बार आप डांस करते दिखाई दे रहे हैं। डांस को लेकर किस तरह की तैयारियां करनी पड़ी? देखिए, मैं तो डांसर बिल्कुल भी नहीं हूं। गाने की शूटिंग से पहले कोरियोग्राफर अमित सियाल ने कुछ स्टेप्स सीखा दिए थे। जब सेट पर पहुंचा तो सब कुछ भूल गया। शूटिंग के समय कोरियोग्राफर और को-एक्टर और सिंगर रेणुका पंवार का सपोर्ट सिस्टम अच्छा था। मुझसे किसी तरह से डांस हो गया। यह पहला ऐसा मौका था जब शूटिंग के दौरान मैंने डांस को एन्जॉय किया। 'यंता' का मतलब ही मौज मस्ती होता है। इस म्यूजिक वीडियो में भी मौज मस्ती भरा डांस है। बॉलीवुड में आप किसे अच्छा डांसर मानते हैं? मेरी नजर में अमिताभ बच्चन और गोविंदा बहुत अच्छे डांसर हैं। इनके डांस की खासियात यह रही है कि ये लोग ऐसा डांस करते हैं, जिसे देखकर मैं भी डांस कर सकता हूं। बॉलीवुड में और भी अच्छे डांसर हैं, लेकिन उनके जैसा मैं डांस नहीं कर सकता, इसलिए उनमें मुझे कोई भी दिलचस्पी नहीं है। बिजी समय में म्यूजिक वीडियो के लिए समय कैसे निकाल पाते हैं? जब पहली बार मैंने 'यंता' का सॉन्ग सुना तो खुद को रोक ही नहीं पाया। यह बहुत ही रिदमिक सॉन्ग है। म्यूजिक को लोग लंबे समय तक याद रखते हैं। म्यूजिक को जितने करोड़ों व्यूज मिलते हैं। उतना लोग फिल्म नहीं देखते हैं। पहले के बड़े स्टार्स को देखिए, तो उनको आगे बढ़ाने में म्यूजिक का बहुत बड़ा कंट्रीब्यूशन रहा है। देव आनंद और दिलीप कुमार साहब को जब याद करते हैं, तो उनकी फिल्मों से पहले उन पर फिल्माए गीत याद आते हैं। देव आनंद और दिलीप कुमार पर फिल्माए गीत जब बजते थे, पता चला चलता था कि किस सिंगर ने आवाज दी होगी। आज की तारीख में आप की आवाज कौन सिंगर बन सकता है? अब वक्त काफी बदल गया है। यह बदलाव शायद आज के म्यूजिशियन और सिंगर्स की वजह से हुआ है। आज इस बात पर लोगों का फोकस नहीं है कि किस स्टार्स पर किस सिंगर्स की आवाज फिट बैठ सकती है। आज सिंगर्स अपनी आवाज के लिए जाने जाते हैं। आप दिलजीत दोसांझ को ही देख लीजिए, वे अपनी आवाज के लिए पहचाने जाते हैं। उनकी बहुत ही तगड़ी फैन फॉलोइंग है। अगर आपको गाने का मौका मिले तो गाएंगे? मैं बहुत खराब सिंगर हूं। मैं बिल्कुल नहीं गा सकता। मैं कान का बहुत अच्छा हूं, अच्छे गाने सुनता हूं। मुझे हर तरह के गाने सुनने पसंद हैं। किसी की आवाज में अगर कशिश होती है, तो वह अपनी ओर मुझे खींच लेती है। वैसे तो सारे सिंगर एक सुर में ही होते हैं, लेकिन कुछेक की गायिकी में एक अलग तरह का फ्लेवर होता है। आप ऐसे एक्टर हैं, जो बॉलीवुड के तीनों खान के साथ काम कर चुके हैं। उनसे जुड़े कुछ खास किस्से शेयर करें। शुरू आमिर खान से करते हैं? मैंने आमिर खान के साथ पहली फिल्म 'सरफरोश' की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म 'पीपली लाइव' प्रोड्यूस की थी। उस फिल्म का सब्जेक्ट बहुत ही आर्टिस्टिक था। उस समय वैसे सब्जेक्ट पर कोई हाथ नहीं लगाता, लेकिन आमिर साहब ने उस फिल्म को प्रोड्यूस की। वह हमारे लिए बहुत बड़ी बात थी। उनकी सबसे खास बात यह है कि उन्हें स्क्रिप्ट की बहुत अच्छी सेंस है कि किस तरह की ऑडियन्स फिल्म को देखेगी। शाहरुख और सलमान खान के बारे में क्या कहना चाहेंगे? शाहरुख खान साहब की खास बात यह है कि शूटिंग से पहले बहुत रिहर्सल करते हैं। वो बहुत ही मेहनती एक्टर हैं। सलमान भाई के साथ काम करके बहुत मजा आता है। वो समाने से अपना डायलॉग मुझे बोलने के लिए दे देते थे। शाहरुख खान के साथ शूटिंग के दौरान का कोई खास किस्सा? हम लोग गुजरात में फिल्म 'रईस' की शूटिंग कर रहे थे। रात में हम लोग एक बार बैठे थे। वो विधु विनोद चोपड़ा की बहुत अच्छी नकल करते हैं। वो कमाल के मिमिक्री आर्टिस्ट हैं। जब उन्होंने विधु विनोद चोपड़ा की नकल की ,मुझे लगा कि वे सामने से आ रहे हैं।

आर्मी छोड़कर एक्ट्रेस बनी थीं ये हसीना

तस्वीर में नजर आ रही ये बॉलीवुड की वो अदाकार है. जो हर फिल्म में अपनी एक्टिंग से चार चांद लगा देती हैं. एक्ट्रेस 19 दिसंबर को 49वां बर्थडे सेलिब्रेट करेंगी. आपने पहचाना? तस्वीर में नजर आ रही ये बॉलीवुड की वो अदाकार है. जो हर फिल्म में अपनी एक्टिंग से चार चांद लगा देती हैं. एक्ट्रेस 19 दिसंबर को 49वां बर्थडे सेलिब्रेट करेंगी. आपने पहचाना?बॉलीवुड में बहुत से एक्टर ऐसे हैं जो पहले किसी और प्रोफेशन में अच्छा कर रहे थे लेकिन फिर उन्होंने एक्टिंग को अपना करियर बनाया और कामयाब भी साबित हुए. आज आपको ऐसी ही एक एक्ट्रेस के बारे में बताएंगे जो लड़कियों के लिए टफ मानी जाने वाली फौज की नौकरी कर रही थीं. लेकिन एक हादसे की वजह से उनकी पूरी जिंदगी बदल गई और वो बॉलीवुड की जानी मानी अभिनेत्री भी बन गई.दरअसल बात कर रहे हैं हिंदी और पंजाबी फिल्मों की मशहूर एक्ट्रेस माही गिल की. माही बॉलीवुड में आने से पहले आर्मी में काम कर रही थीं. माही ने फौज की नौकरी छोड़ी और फिर उन्हें किस्मत से पंजाबी फिल्मों में ब्रेक भी मिला, इसके बाद माही ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा.माही चंडीगढ़ के एक जमींदार परिवार में पैदा हुईं थी और उनके माता-पिता दोनों ही नौकरीपेशा थे. पिता एक सरकारी अफसर और मां एक कॉलेज लेक्चरर के तौर पर काम करती थीं. कॉलेज के दौरान ही माही ने एनसीसी ज्वाइन की जिससे उन्हें फौज की नौकरी चुनने में आसानी भी हुई. आर्मी में सलेक्शन के बाद काफी वक्त तक माही फौज का हिस्सा भी रहीं.एक इंटरव्यू के दौरान माही ने फौज छोड़ने का कारण भी बताया था. माही ने बताया कि चेन्नई में पैरा सेलिंग ट्रेनिंग के दौरान उनके साथ एक हादसा हो गया था. ट्रेनिंग के दौरान जब उन्होंने पैरा जंप किया तो उनका फ्रीफॉल हो गया था. इस हादसे में माही की जान मुश्किल से बची थी. माही बताती हैं कि इस हादसे को सुनकर उनका परिवार बेहद घबरा गया था और उन्हें इसकी वजह से ही घर वापस लौटना पड़ा था. इसके बाद माही ने आर्मी की नौकरी छोड़ दी थी. एक्टिंग करियर को लेकर माही ने बताया कि उन्हें कभी भी एक्टिंग से लगाव नहीं था. उन्होंने कभी फिल्मों में काम करने का सोचा भी नहीं था. माही बताती हैं कि आर्मी में मेरी फायरिंग और कमांड काफी अच्छी थी. अगर मैं आर्मी छोड़कर एक्टिंग में नहीं आती तो शायद आर्मी में किसी अच्छे पद पर काम कर रही होती. रिपब्लिक डे पर भी मुझे कमांड करने के लिए बुलाया जाता रहता था. आर्मी छोड़ने के बाद एक फिल्म डायरेक्टर से माही की मुलाकात हुई और उनको उनकी पहली फिल्म मिली थी. वहीं साल 2009 में उन्होंने अनुराग कश्यप की 'देव डी' से बॉलीवुड में एंट्री की थी. इसके बाद 'साहेब बीवी और गैंगस्टर', 'दबंग' जैसी फिल्मों के अलावा कई वेब सीरीज में भी उन्होंने दमदार किरदार निभाए हैं.

बॉक्सिंग डे टेस्ट में शुभमन गिल की होगी अग्निपरीक्षा

वहीं भारतीय बल्लेबाज इस सीरीज में अभी तक फेल रहे हैं, वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सके हैं। साथ ही टीम के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल की फॉर्म भी टीम के लिए चिंता का विषय बन गई है, आखकर एशिया के बाहर उनके आंकड़े मायूस करते हैं।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। सीरीज के शुरुआती तीन मैच खेले जा चुके हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट भारत ने जीता जबकि उसके बाद एडिलेड टेस्ट में उसे हार झेलनी पड़ी तो गाबा टेस्ट ड्रॉ रहा। वहीं भारतीय बल्लेबाज इस सीरीज में अभी तक फेल रहे हैं, वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सके हैं। साथ ही टीम के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल की फॉर्म भी टीम के लिए चिंता का विषय बन गई है, आखकर एशिया के बाहर उनके आंकड़े मायूस करते हैं। लाइव खेल ऑनलाइन देखें भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली और रविंद्र जडेजा जैसे अनुभवी खिलाड़ी कुछ ही मैचों में भारत के लिए टेस्ट में खेलते हुए नजर आएंगे। जिसके बाद शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ियों पर टीम को संभालने की जिम्मेदारी होगी। गिल में सभी को भविष्य की झलक दिखती है और यही कारम है कि उन्हें टीम में लगातार मौके मिलते रहते हैं। लेकिन 2022 के बाद से एशिया के बाहर उनका प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। गिल ने 2021 ब्रिसबेन टेस्ट के बाद से 16 पारियों में 17.80 की औसत से 267 रन बनाए हैं। उनका बेस्ट स्कोर 36 रन रहा है। 2021 में गिल ने 146 गेंदों में 91 रन की दमदार पारी खेली थी लेकिन उसके बाद से उनके बल्ले से रन नहीं निकले हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी टेस्ट सीरीज में शुभमन गिल भारत के लिए तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं लेकिन तीन पारियों में वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट गिल ने नहीं खेला था। लेकिन दूसरे टेस्ट में वह प्लेइंग इलेवन का हिस्सा थे और सिर्फ 59 रन ही बना सके। पहली पारी में 31 और दूसरी पारी में उन्होंने 28 रन ही बनाए।

ऑस्ट्रेलिया दौरे पर नहीं जाएंगे शमी

अगले दो टेस्ट के लिए अनफिट घोषित, बीसीसीआई ने दी जानकारी

मुंबई। हाल ही में तीसरे टेस्ट मैच के बाद कप्तान रोहित शर्मा ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के अधिकारियों से शमी की फिटनेस पर स्थिति स्पष्ट करने कहा था और अब भारतीय बोर्ड ने उन्हें अनफिट करार दिया। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ऑस्ट्रेलिया दौरे पर नहीं जाएंगे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को इस तेज गेंदबाज की फिटनेस पर जानकारी दी और उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अगले दो टेस्ट के लिए अनफिट घोषित किया। हाल ही में तीसरे टेस्ट मैच के बाद कप्तान रोहित शर्मा ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के अधिकारियों से शमी की फिटनेस पर स्थिति स्पष्ट करने कहा था और अब भारतीय बोर्ड ने उन्हें अनफिट करार दिया। शमी को घुटने की चोट के कारण बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए 18 सदस्यीय भारतीय टीम में शामिल नहीं किया गया था। शमी पिछले साल वनडे विश्व फाइनल के बाद से भारतीय टीम से बाहर चल रहे हैं और उन्होंने रणजी ट्रॉफी के जरिये मैदान पर वापसी की थी। शमी घरेलू क्रिकेट में खेल रहे हैं और बीसीसीआई की मेडिकल टीम लगातार उन पर नजरें रखी हुई थी। शमी की घुटने में हल्की सूजन बीसीसीआई ने इस बात की पुष्टि की है कि घुटने की चोट के कारण शमी लंबे समय से टीम से बाहर हैं और उन्हें शमी के जल्द पूरी तरह स्वस्थ होने की उम्मीद है। बीसीसीआई ने शमी की फिटनेस पर जानकारी देते हुए कहा, बीसीसीआई की मेडिकल टीम भारतीय तेज गेंदबाज शमी के साथ करीब से काम कर रही थी जिससे वह जल्द चोट से उबर सकें। शमी टखने की चोट से पूरी तरह उबर चुके थे। शमी ने रणजी ट्रॉफी में मध्य प्रदेश के खिलाफ बंगाल के लिए 43 ओवर गेंदबाजी की। इसके अलावा उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के सभी नौ मैच खेले, जहां वह अतिरिक्त गेंदबाजी सत्र में शामिल हुए जिससे टेस्ट मैच के लिए फिट हो सकें। बीसीसीआई ने कहा, हालांकि, गेंदबाजी वर्कलोड के कारण शमी के बाएं घुटने में हल्की सूजन थी। लंबे समय के बाद लगातार गेंदबाज करने के कारण सूजन अपेक्षित स्तर पर है। वर्तमान चिकित्सा मूल्यांकन के आधार पर, बीसीसीआई मेडिकल टीम ने निर्धारित किया है कि उनके घुटने को गेंदबाजी भार के नियंत्रित प्रदर्शन के लिए अधिक समय की आवश्यकता है। इस कारण शमी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के शेष दो टेस्ट के लिए फिट घोषित नहीं करार दिए गए हैं। विजय हजारे ट्रॉफी में खेलने पर संशय शमी पिछले सप्ताह दिल्ली के खिलाफ बंगाल के विजय हजारे ट्रॉफी के पहले मुकाबले में नहीं खेले थे। बीसीसीआई ने इस बात की पुष्टि की है कि मेडिकल टीम शमी के वर्कलोड पर लगातार निगरानी रख रही है और उनका विजय हजारे ट्रॉफी वनडे टूर्नामेंट में खेलना इस बात पर निर्भर करेगा कि वह कितनी जल्द ठीक हो रहे हैं। बीसीसीआई ने कहा, शमी बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में मेडिकल स्टाफ की निगरानी में रहेंगे और अपनी गेंदबाजी कार्यभार पर काम करेंगे जिससे वह लंबे प्रारूप के खेल के लिए फिट हो सकें। उनका विजय हजारे ट्रॉफी में खेलना इस बात पर निर्भर करेगा कि उनका घुटना कितनी जल्दी ठीक हो रहा है।

चैंपियंस ट्रॉफी में इस दिन भिड़ेगी भारत और पाकिस्तान की टीम, यूएई में होगा महामुकाबला

क्रिकेट न्यूज। चौंपियंस ट्रॉफी के पहले ग्रुप में भारत, पाकिस्तान बांग्लादेश और न्यूजीलैंड है। ऐसे ही दूसरे ग्रुप में अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका है। गत चौंपियन पाकिस्तान 19 फरवरी को कराची में न्यूजीलैंड के खिलाफ टूर्नामेंट की शुरुआत करेगा। अगले साल होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी पर छाए संकट के बादल अब साफ होने लगे हैं। पाकिस्तान की मेजबानी में होने वाले टूर्नामेंट में भारत अपने मैच संयुक्त अरब अमीरात में खेलेगा। दोनों देशों के रिश्तों में जारी तनातनी और सुरक्षा को लेकर चिंताओं की वजह से केंद्र सरकार ने भारत को पाकिस्तान दौरे की इजाजत नहीं दी थी। इस वजह से टूर्नामेंट के लिए हाइब्रिड मॉडल पर सहमति बनी है। हालांकि, यह फैसला पहले से ही तय था, लेकिन पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी और यूएई के मंत्री शेख नाहयान अल मुबारक की मुलाकात के बाद इसे अंतिम रूप दिया गया। शेख नाहयान अमीरात क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख भी हैं। पीसीबी के प्रवक्ता आमिर मीर ने बताया कि पीसीबी ने चौंपियंस ट्रॉफी के लिए यूएई को शतटस्थ जगहश् के रूप में चुना है। कब होगा महामुकाबला? क्रिक इंफो की रिपोर्ट के मुताबिक, गत चौंपियन पाकिस्तान 19 फरवरी को कराची में न्यूजीलैंड के खिलाफ टूर्नामेंट की शुरुआत करेगा। पाकिस्तान का आखिरी लीग मैच बांग्लादेश के खिलाफ रावलपिंडी में 27 फरवरी को खेला जाएगा। चौंपियंस ट्रॉफी में भारत और पाकिस्तान के बीच लीग मैच 23 फरवरी (रविवार) को खेला जाएगा। हालांकि, आईसीसी ने अब तक चौंपियंस ट्रॉफी के कार्यक्रम की पुष्टि नहीं की है। भारत-पाकिस्तान के अलावा बांग्लादेश और न्यूजीलैंड गुप-ए में पाकिस्तान के अलावा भारत के ग्रुप में अन्य दो टीमें बांग्लादेश और न्यूजीलैंड हैं। महामुकाबले से पहले भारत का सामना 20 फरवरी को बांग्लादेश से होगा और पाकिस्तान से भिड़ने के बाद टीम 2 मार्च को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। ये सभी मैच दुबई में हो सकते हैं। दूसरे ग्रुप में अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और अफ्रीका दूसरे ग्रुप में अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका हैं। भारत के खेलों के अलावा दोनों ग्रुप के मैच लाहौर, कराची और रावलपिंडी में खेले जाएंगे। सेमीफाइनल और फाइनल के लिए क्या व्यवस्था? रिपोर्ट के मुताबिक, दो सेमीफाइनल 4 मार्च (बिना रिजर्व डे के) और 5 मार्च (रिजर्व डे के साथ) को होंगे। 9 मार्च को होने वाले फाइनल में भी रिजर्व डे की व्यवस्था रहेगी। पहला सेमीफाइनल (अगर भारत उसमें पहुंचता है) यूएई में खेला जाएगा। अगर भारत क्वालीफाई नहीं करता है तो मैच पाकिस्तान में ही होगा। ऐसे ही फाइनल लाहौर में खेला जाएगा। अगर भारत खिताबी मुकाबले तक पहुंचता है तो इसे यूएई में कराया जाएगा। 2024-2027 तक लागू रहेगा हाइब्रिड मॉडल इससे पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को बताया था कि भारत और पाकिस्तान के सभी मुकाबले न्यूट्रल वेन्यू (तटस्थ स्थल) पर खेले जाएंगे। इसका अर्थ है कि अब दोनों टीमें किसी भी आईसीसी टूर्नामेंट में एक-दूसरे के देश के दौरे पर नहीं जाएंगी और दोनों टीमों के बीच किसी तटस्थ स्थान पर मुकाबले खेले जाएंगे। यह नियम 2024-2027 तक लागू रहेगा

इस दिन होगा भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला

लंबे इंतजार के बाद आईसीसी कभी भी चौंपियंस ट्रॉफी 2025 का शेड्यूल जारी कर सकता है। ये टूर्नामेंट अगले साल फरवरी-मार्च में खेला जाएगा। वहीं इसकी मेजबानी पाकिस्तान करने जा रहा है हालांकि, ये टूर्नामेंट हाइब्रिड मॉडल से खेला जाएगा। वहीं भारत के मैच दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जा सकते हैं। लेकिन इससे पहले चौंपियंस ट्रॉफी के रिकॉर्ड पर एक नजर डालते हैं। आईसीसी चौंपियंस ट्रॉफी में सबसे सफल टीमें भारत और ऑस्ट्रेलियाई टीम हैं। दोनों टीमों ने 2-2 बार आईसीसी चौंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता है, लेकिन चौंपियंस ट्रॉफी में सबसे ज्यादा मैच जीतने का रिकॉर्ड भारत के नाम है। इसके बाद वेस्टइंडीज का नंबर आता है तो तीसरे नंबर पर इंग्लैंड है जिसने सबसे ज्यादा मैच जीते हैं। भारत-21 वेस्टइंडीज-18 इंग्लैंड- 17 श्रीलंका- 15 ऑस्ट्रेलिया-15 पाकिस्तान-14 न्यूजीलैंड- 13 दक्षिण अफ्रीका-13 बांग्लादेश- 2 चौंपियंस ट्रॉफी 2017 में 8 टीमों के बीच खेली गई थी। उसमें 15 मैच खेले गए थे, लेकिन नॉकआउट स्टेज से पहले ग्रुप मैच में ऑस्ट्रेलिया बुरी तरह से हार गया और बाहर हो गया। ग्रुप स्टेज में ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैच खेले, जिसमें दो मैचों का कोई नतीजा नहीं निकला। एक मैच इंग्लैंड के खिलाफ था और ऑस्ट्रेलिया ये मैच हार गया। बांग्लादेश की टीम भी ऑस्ट्रेलिया के ग्रुप में थी। बांग्लादेश ग्रुप स्टेज में खेले गए तीन मैचों में से एक मैच का कोई नतीजा नहीं निकला। एक मैच में बांग्लादेश को हार का सामना करना पड़ा और एक मैच बांग्लादेश जीतने में सफल रहा। जिसके चलते बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर गई। भारत अे पाकिस्तान हेड टू हेड चौंपियंस ट्रॉफी में भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक पांच मैच खेले गए हैं। इन मैचों में पाकिस्तान का पलड़ा भारी रहा है। इन पांच मैचों में पाकिस्तान ने तीन तो भारत ने दो मैच अपने नाम किए हैं।

बैडमिंटन क्वीन पीवी सिंधु ने उदयपुर में रचाई शादी, अब हैदराबाद में होगा रिसेप्शन

भारत की स्टार बैडमिंटन प्लेयर पीवी सिंधु वेंकट दत्ता के साथ उदयपुर में शादी के बंधन में बंध गई। पूर्व वर्ल्ड चौंपियन और दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट सिंधु ने 22 दिसंबर को अपने मंगेतर से शादी की। इस शादी की तस्वीर सामने आई है। पीवी सिंधु ने अब तक इंस्टाग्राम पर शादी की तस्वीरें शेयर नहीं की हैं। हालांकि, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने नए जोड़े के साथ तस्वीर शेयर की है। तस्वीर में सिंधु और वेंकट बैठे हुए नजर आ रहे हैं। सिंधु ने गोल्डन क्रीम कलर की साड़ी पहनी हुई है। कई आभूषण भी पहने हुए हैं। दोनों हाथ जोड़कर गजेंद्र सिंह का अभिवादन कर रहे हैं। वहीं केंद्रीय मंत्री ने ट्वीट करते हुए लिखा कि, कल शाम 22 दिसंबर उदयपुर में वेंकट दत्त साई के साथ हमारी बैडमिंटन चौंपियन ओलंपियन पीवी सिंधु के विवाह समारोह में शामिल होकर खुशी हुई। मैंने इस जोड़े को उनके नए जीवन के लिए शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया।

टेस्ट में टॉप ऑर्डर को... रविंद्र जडेजा ने रोहित-कोहली के लिए कह दी ये बात

भारत के स्टार ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने शनिवार को कहा कि टॉपक्रम के रन नहीं बना पाने से निचलेक्रम पर दबाव बनता है। जडेजा ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में बॉक्सिंग डे टेस्ट में बल्लेबाजों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफवर्षाबाधित ब्रिसबेन टेस्ट में जडेजा ने पहली पारी में 77 रन बनाकर ड्रॉ कराने में अहम भूमिका निभाई। जडेजा ने एमसीजी पर बातचीत के दौरान कहा कि, भारत के बाहर खेलने पर टॉप क्रम के रन काफी अहम है खासकर ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में। जब टॉप क्रम रन नहीं बनाता है तो निचले क्रम पर दबाव बन जाता है। उन्होंने कहा कि, उम्मीद है कि इस टेस्ट में टॉप क्रम और मध्यक्रम अच्छे रन बनाएगा। हमें टॉप क्रम से अच्छे प्रदर्शन की जरूरत है। अगर बल्लेबाजों में सभी योगदान देंगे तो टीम का प्रदर्शन बेहतर होगा। ब्रिसबेन के गाबा स्टेडियम में केएल राहुल (84) को छोड़कर भारत के टॉप क्रम के बल्लेबाज कुछ खास नहीं कर सके। पहले दो टेस्ट से बाहर रहे जडेजा को गाबा में मौका दिया गया था। जडेजा ने कहा कि पहले दो टेस्ट से बाहर रहने से उन्हें हालात के अनुकूल ढलने और गाबा टेस्ट की तैयारी का सम मिल गया।

अनमोलप्रीत सिंह का कारनामा, 35 गेंदों में ठोका तूफानी शतक, यूसुफपठान का ये रिकॉर्ड तोड़ा

विजय हजारे ट्रॉफी का आगाज हो गया है, जहां पहले ही मैच में पंजाब के अनमोलप्रीत सिंह ने बड़ा कारनामा कर दिया है। दरअसल, अनमोलप्रीत सिंह सबसे तेज लिस्ट ए शतक लगाने वाले भारतीय बन गए हैं। उन्होंने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम ग्राउंड ए में अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ ये उपलब्धि हासिल की है। अनमोलप्रीत ने अरुणाचल प्रदेश के गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। उन्होंने 12 चौकों और 9 छक्कों की मदद से पंजाब को 9 विकेट से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। अनमोलप्रीत ने सिर्फ35 गेंदों में शतक पूरा किया। लिस्ट ए में ये तीसरा सबसे तेज शतक है। ऑस्ट्रेलिया के जेक फ्रेजर-मैकगर्क और दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स इस लिस्ट में पहले और दूसरे स्थान पर मौजूद हैं। जेक ने 29 गेंद में और एबी डिविलियर्स इस लिस्ट में पहले और दूसरे स्थान पर मौजूद हैं। जेक ने 29 गेंद में और एबी ने 31 गेंदों में शतक ठोका था। इससे पहले किसी भारतीय द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड यूसुफपठान के नाम था, उन्होंने 2009-10 में विजय हजारे ट्रॉफी में महाराष्ट्र के खिलाफबड़ौदा की ओर से खेलते हुए 20 गेंदों में शतक बनाया था। पंजाब को 50 ओवर में 165 रनों का लक्ष्य हासिल करना था और अनमोलप्रीत सिंह ने ज्यादातर रन बनाए। अनमोलप्रीत सिंह ताबड़तोड़ शॉट खेलते हुए नजर आए। उन्होंने 35 गेंद में अपना शतक पूरा किया और 115 रन बनाकर नाबाद लौटे। पंजाब ने 12.5 ओवर में ही लक्ष्य को हासिल कर लिया।

लॉजिस्टिक्स सुधार के लिए सरकारी मंचों के साथ उद्योग के एकीकरण का आह्वान

नयी दिल्ली । वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने लॉजिस्टिक क्षेत्र की दक्षता में सुधार के लिए उद्योग से जुड़े हितधारकों को सरकारी मंचों के साथ पूर्ण रूप से एकीकृत करने का आह्वान किया। उन्होंने लॉजिस्टिक्स उद्योग से इस क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन में कटौती के लिए टिकाऊ और हरित प्रथाओं को अपनाने पर काम करने का भी आग्रह किया। मंत्री ने कहा, '' हमें समग्र कार्बन प्रभाव को कम करने और स्थिरता को अपनी सोच का मूल बनाने के लिए इलेक्ट्रिक परिवहन, जैव ईंधन, मल्टीमॉडल परिवहन विकल्प जैसी प्रौद्योगिकी को अपनाना होगा।'' कौशल विकास पर जोर देते हुए गोयल ने भविष्य के लिए तैयार कार्यबल को प्रशिक्षित और तैयार करने के लिए संस्थानों के साथ सहयोग का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कृत्रिम मेधा (एआई) और 'डेटा एनालिटिक्स' का इस्तेमाल कर यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि समय और लागत में कोई वृद्धि न हो।

दिग्गज रेसलर रे मिस्टेरियो ने दुनिया को कहा अलविदा, द ग्रेट खली और जॉन सीना को दे चुके थे पटखनी

मैक्सिकन कुश्ती के स्टार रहे रे मिस्टेरियो सीनियर ने 66 वर्षीय की उम्र में अंतिम सांस ली है।

अश्विन को लेकर टीम मैनेजमेंट पर भड़के सुनील गावस्कर

टीम इंडिया के स्टार स्पिनर आर अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। इसका ऐलान उन्होंने भारत और ऑस्ट्रेलिया के गाबा टेस्ट के बाद किया।

जीता टी20 वर्ल्ड कप का खिताब, लेकिन झेलनी पड़ी इन टीमों से हार

भारत ने टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर इतिहास रचा तो वहीं उसे अपने ही घर में गहरे जख्म भी झेलने पड़े। इस साल भारत ने कुछ रिकॉर्ड बनाए तो वहीं कुछ टीमों के खिलाफटीम को हार का सामना भी करना पड़ा। न्यूजीलैंड जैसी विदेशी टीम ने भारत को घर पर पटखनी दी, जो भारतीय क्रिकेट फैंस के दिलों में गहरी टीस छोड़ गया।

साल 2024 भारतीय क्रिकेट टीम के लिए काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा। जहां एक और भारत ने टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर इतिहास रचा तो वहीं उसे अपने ही घर में गहरे जख्म भी झेलने पड़े। इस साल भारत ने कुछ रिकॉर्ड बनाए तो वहीं कुछ टीमों के खिलाफटीम को हार का सामना भी करना पड़ा। न्यूजीलैंड जैसी विदेशी टीम ने भारत को घर पर पटखनी दी, जो भारतीय क्रिकेट फैंस के दिलों में गहरी टीस छोड़ गया। घर पर झेली करारी हार वेस्टइंडीज की धरती पर टी20 वर्ल्ड कप में बेहतरीन प्रदर्शन और खिताबी जीत निश्चित रूप से साल का एक बड़ा सकारात्मक पल रहा। लेकिन घर में भारत को जि तरीके से हार झेलनी पड़ी उसने कई सवाल भी खड़े किए। इस साल एक विदेशी टीम ने भारत में आकर रोहित ब्रिगेड को क्लीन स्वीप कर दिया, जिसका असर भारतीय टीम पर लंबे अरसे तक देखने को मिलेगा। इस हार ने टीम इंडिया को ये भी सिखाया कि किसी भी टीम को कम आंकना अपने लिए नुकसान हो सकता है। फिर चाहे किसी वह किसी भी स्थान पर खेल रही हो। लाइव खेल ऑनलाइन देखें कीवियों ने भारत को रौंदा भारत और न्यूजीलैंड के बीच 2024 की तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में भारत को हार मिली। भारत ने 2024 की शुरुआत में बांग्लादेश को टेस्ट सीरीज में हराया। इससे पहले के प्रदर्शन को देखते हुए भारतीय फैंस को उम्मीद थी कि भारत न्यूजीलैंड के खिलाफ भी उसी तरह की शानदार सफलता हासिल करेगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई नं० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।